पा व न - प्र सं ग

मृदुला मूँदड़ा

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन

रा ज घा ट, का शी

अनुक्रम

पावन-प्रसंग

गंगोत्री : १ :

रामनवमी के दिन तेलंगाना की यात्रा प्रारम्भ हुई। तारीख थी, १३ अप्रैल १९५१। ता० १८ को पोचमपल्ली में पड़ाव था। नलगुंडा जिले का पहला स्थान। कम्युनिस्ट-आन्दोलन का अड्डा। हत्याओं, लूट आदि से गाँव अछूता न था।

ग्रामवासियों ने विनोवाजी का वड़ा भाव-भरा स्वागत किया। चंदन-तिलक, पुष्प-मालाएँ, पुरुषसूक्त, श्रीफल-समर्पण आदि सब विधिवत् हुआ।

विनोवाजी ग्राम-प्रदक्षिणा के लिए निकले। पहले हरिजन-वस्ती में ही गये। मकानों के भीतर घुसे। नवजात शिशु को गोद में उठा लिया। मरीजों की हालत देखी। खाने-पीने का सामान देखा। सारी वस्ती साथ हो गयी।

लौटने लगे, तो लोगों ने प्रार्थना की :

"आपने मकानों की हालत तो देखी। परिवार बहुत ज्यादा हैं। जगह बहुत कम है। मकानों के लिए थोड़ी और जगह पड़ोस में मिलनी चाहिए।"

पास में ही जमीन तो थी, मिलने की संभावना भी थी। विनोबा कुछ सोचने लगे और आगे बढ़े।

लोग आशा में पीछे-पीछे हो लिये।

विनोबाजी के साथ डेरे तक चले आये। डेरे पर और ग्रामवासी भी जुटे थे। विनोबाजी ने अपने आसन पर बैठते हुए हरिजन भाइयों से पूछा :

"क्यों, और कुछ कहना है ?"

"जी !"

"कहो।"

"हम लोगों के पास सिवा मजदूरी के कोई धन्धा नहीं है। मजदूरी का मिलना मालिक की मर्जी पर रहता है। जिस दिन काम नहीं मिलता, उस दिन फाका करना पड़ता है। हमें खेती के लिए भी अगर कुछ जमीन मिल सके, तो ठीक होगा। इज्जत की रोटी कमा सकेंगे।"

"कितने परिवार हैं ?"

"तीस।"

"जमीन कितनी चाहिए ?"

लोग आपस में विचार करने लगे।

मुखिया ने कहा, "अस्सी एकड़ काफी होगी। फिर कुछ मजदूरी भी कर लेंगे।"

एक भाई ने बताया, "यहाँ सरकारी जमीन तो काफी है।"

"अच्छा, आप लोग एक दरख्वास्त तो लिख दीजिये। सरकार के पास भेजकर देखेंगे।"

शायद सोचने लगे, अरजी पर विचार कब होगा—इन लोगों को जमीन कब मिलेगी और तब तक इन लोगों का क्या होगा?

सहसा उन्होंने पूछा, "क्या यहाँ कोई भूमिवान् भाई नहीं है?" और जवाब की राह देखे बिना आगे कहना जारी रखा, "आखिर ये लोग भी हमारे भाई ही हैं। आपमें से कोई इनकी माँग पूरी कर सकते हैं?"

सभा में क्षण भर पूर्ण शान्ति छा गयी।

फिर एक भाई ने उठकर नम्रतापूर्वक निवेदन किया, "विनोबाजी, अपने पिताजी की स्मृति में मैं सौ एकड़ अर्पित करना चाहता हूँ। स्वीकार कीजिये।"

श्री रामचन्द्र रेड्डी ने सौ एकड़ के दान का संकल्प-पत्र विनोबाजी के नाम लिख दिया।

दो गवाहों ने गवाही भी कर दी।

पाँच आदमियों की एक कमेटी उस जमीन की व्यवस्था के लिए नियुक्त हो गयी।

इस प्रकार भूदान की गंगोत्री प्रकट हुई।

भीम-जरासंध, राम-लक्ष्मण बन गये   : २ :

तंगड़पल्ली गाँव तो छोटा-सा है, पर वहाँ झगड़ा बड़ा-सा था। मूल झगड़ा था दो भाइयों के बीच। इन दोनों का झगड़ा सारे गाँव में फैल गया और गाँव में दो दल बन गये। एक पक्षवाले दूसरे पक्षवालों का मुँह देखना भी पसन्द नहीं करते थे। कितनों को तो गाँव ही छोड़ जाना पड़ा। दो में से एक भाई यहीं रहते थे, पर दूसरे भाई गाँव छोड़कर चले गये थे। आज विनोबाजी के कारण ही आये, क्योंकि उन्हींके घर हमारा डेरा रखना तय हुआ था।

विनोबा ने गाँववालों से पूछा, "तुम्हारे गाँव की क्या कठिनाई है ?"

गाँववालों ने कहा, "यह झगड़ा ही हमें खा रहा है। यह मिटे, तो हम सुखी हों।"

विनोबा ने दोनों भाइयों को प्रेम से समझाया। दोनों अपनी भूल समझ गये। वर्षों के बाद दोनों ने शाम को सहयात्रियों की पंक्ति में बैठकर एक साथ भोजन किया और प्रार्थना-सभा में दोनों भाई गले मिले। दोनों की आँखों में हर्ष और पश्चात्ताप के आँसू थे। भीम-जरासंध की तरह रहनेवाले दोनों भाई उस दिन से राम-लक्ष्मण बन गये।

दोनों ने पर्याप्त भूदान भी दिया।

छठा बेटा : ३ :

भूदान की गंगा धीमे-धीमे आगे बढ़ती जा रही थी। एक छोटे देहात में बाबा किसान भाइयों से तेलुगु में ही चर्चा कर रहे थे। एक भाई से पूछा, "आपके पास कितनी जमीन है?"

जवाब मिला, "केवल नौ बीघा।"

बाबा ने पूछा, "यज्ञ में आपने आहुति अर्पण की है या नहीं?"

उसने हँसकर कहा, "महाराज, मेरे पाँच बेटे हैं, हर-एक के हिस्से में मुश्किल से दो बीघा जमीन आती है। आपको क्या दूँ?"

बाबा ने कहा, "भगवान् की कृपा है कि आपके पाँच बेटे हैं। अगर परमेश्वर की कृपा से छठा बेटा और पैदा हो जाय, तो क्या आप उससे कहेंगे, 'बेटा, तू देर से आया, अब तेरे लिए जमीन नहीं है, जमीन पहले ही बँट चुकी है, तू अब जा'।"

प्रश्न हृदय को छू गया। हाथ जोड़कर बोला, "नहीं महाराज, उसे तो देना ही होगा।"

तब बाबा ने कहा, "समझ लो, मैं ही तुम्हारा छठा बेटा पैदा हो गया हूँ। मुझे मेरा हिस्सा दो।"

किसान ने थोड़ी देर बाबा का चेहरा निहारा और उसमें उसने अपना बेटा पाया या साक्षात् परमेश्वर के दर्शन किये, पता नहीं; पर छठा हिस्सा उसने लिख दिया।

मेरा दान-पत्र भी भर देना था　　: ४ :

नलगुंडा जिले का अंतिम पड़ाव सूर्यपेठ । कार्यकर्ताओं की सभा थी। जिले के बहुत-से कार्यकर्ता आ पहुँचे थे।

भूदान की गंगा का प्रारम्भ ही था। अपना अनुभव बताते हुए विनोबाजी ने कहा, "मैं देखता हूँ कि जब तक कार्यकर्ता अपना हिस्सा नहीं देगा, वह जमीन माँग नहीं सकेगा।"

कार्यकर्ता सोचने लगे। जमीन तो बहुतों के पास थी। परन्तु कौन पहले उठे !

श्री कोदंडराम रेड्डी यात्रा के प्रारम्भ से हमारे सह-यात्री थे। नलगुंडा जिले के ही रहनेवाले दो भाई, दोनों संयुक्त परिवार में एकत्र रहते थे। दोनों की मिलकर चार सौ चौसठ बीघा जमीन थी। दूसरे भाई भी आज आनेवाले थे, परन्तु पहुँच नहीं पाये थे। वे ही बड़े थे।

कोदंड रेड्डी उठे।

"हम दो भाई हैं। मेरे हिस्से की जमीन में से पूज्य विनोबाजी को भूदान-यज्ञ में चौथा हिस्सा—एक सौ सोलह एकड़ अर्पण करता हूँ।"

तालियों की वर्षा हुई।

एक-एक करके कार्यकर्ता उठने लगे। दान-पत्र भरे जाने लगे।

शाम को कोदंड रेड्डी के बड़े भाई भी आ पहुँचे। विनोबा के दरबार में शिकायत पेश हुई : "हम दोनों अब तक एक साथ रहे। कभी किसी बात में भेद नहीं किया। आज कोदंड रेड्डी ने भेद किया। भूदान-यज्ञ में केवल अपने ही हिस्से की जमीन दी। यदि मेरे हिस्से की भी जमीन दे देता, तो क्या मैं मना करता ?" और यह कहते-कहते उनका कंठ भर आया। अपने हिस्से की एक सौ सोलह एकड़ भूमि का एक और दान-पत्र उन्होंने भी भर दिया।

एक बीघे की सीख : ५ :

सूर्यपेठ की ही बात है। शाम को सभा खूब जमी थी। बहनें भी बड़ी संख्या में आयी थीं। दोपहर में महिलाओं की अलग सभा भी हुई थी। उसमें भूदान का विचार सरल भाषा में समझाया गया। एक बहन घर छोड़कर अधिक समय नहीं रह सकती थी। बाबा का भाषण सुनने की उसकी इच्छा तो तीव्र थी, परन्तु घर पर छोटे बच्चे थे। वह बहन सभा पूरी होने के बाद घर चली गयी थी।

सवेरे बाबा जब रवाना हो रहे थे, तो वह दौड़ी-दौड़ी आयी और बोली, "बाबाजी, मेरे पास केवल दो बीघा जमीन है। एक बीघा भू-दान में देने आयी हूँ।" और साथ में उसने एक गाय भी अर्पण की।

बाबा कई बार इसका जिक्र करते हैं और कहते हैं, "एक बहन दौड़कर आती है। दो बीघे में से एक बीघा जमीन देकर चली जाती है। क्या आप समझते हैं कि अब बड़े लोग चुप रहेंगे? छोटों का त्याग उनसे भी दिलवायेगा ही!"

सुरगाँव की शुभकामना : ६ :

प्रधान मंत्री के निमन्त्रण पर विनोबा ने दिल्ली जाना तय किया। जाने से एक दिन पूर्व वे सुरगाँव के लोगों से मिलने गये।

"मैं दिल्ली जा रहा हूँ। रास्ते में जमीन माँगता हुआ जाऊँगा। आप लोगों के बीच मैं इतने दिन रहा। लोग मुझसे पूछेंगे, सुरगाँव से कितनी जमीन मिली? क्या जवाब दूँगा? मेरी माँग छठे हिस्से की है।"

सुरगाँव की सारी जमीन बहुत उपजाऊ है। लोगों ने उस पर बड़ा श्रम किया है। केले तथा अन्य फलों के कितने ही बगीचे हैं। विनोबा की माँग पर ग्रामवासियों ने अपने गाँव का हिस्सा साठ एकड़ देकर बिदा किया।

शुभास्ते पंथानः सन्तु !

मैं अधूरा प्रेम नहीं कर सकता : ७ :

दिल्ली की यात्रा किसी महान् क्रांति की सूचक थी। इसलिए वर्धा से चलते समय एक से एक पावन संकेत होते गये।

श्री दत्तोबा दास्ताने विनोबाजी के निकट के आश्रमवासी हैं। कितने ही दिनों तक उन्होंने उनके सचिव का भी काम बहुत योग्यतापूर्वक सँभाला है। बड़ा परिवार है—पत्नी हैं, तीन बालक हैं और पिताजी बापू के पुराने सहकारी हैं। उनकी अपनी अठारह एकड़ भूमि थी। उसकी पैदावार से गृहस्थी को काफी सहारा मिल जाता था। विनोबाजी दिल्ली के लिए विदा होने लगे, तो दत्तोबाजी ने अपनी अठारह एकड़ भूमि का दान-पत्र विनोबा के चरणों पर अर्पित कर दिया।

आश्रमवासियों में से एक बुजुर्ग अभिभावक ने कहा, "ये अपनी सारी-की-सारी जमीन दे रहे हैं। आप कुछ जमीन स्वीकार कर लें। शेष इनके लिए छोड़ना ठीक रहेगा।"

विनोबाजी ने तत्क्षण और सहज भाव से उत्तर दिया, "दत्तोबा छोटे से बड़े मेरे ही पास हुए हैं। मैं उन पर

अधूरा प्रेम नहीं कर सकता।" और उस पूरी जमीन का दानपत्र उन्होंने स्वीकार कर लिया।

× × ×

वैसा ही श्री गणेशराव ठाकरे का हुआ। वे भी पिछले कई वर्षों से आश्रम में रहने लगे थे। भूदान-यज्ञ के आवाहन को वे भी नहीं रोक सके। उन्होंने भी अपनी पूरी जमीन, करीब आठ एकड़ भूदान में लिखा दी और उसे भी विनोबा ने स्वीकार कर लिया।

पठान की प्रतिज्ञा : ८ :

नागपुर जाते हुए बीच में रास्ते से दूर गुमगाँव पड़ता है। मोहम्मद पठान गुमगाँव के पुराने कांग्रेसी कार्यकर्ता हैं। जेल में विनोबाजी के पास कुरानशरीफ भी पढ़ते थे। जब सुना कि विनोबा की दिल्ली-यात्रा में गुमगाँव का नाम नहीं है, तो पवनार आये और यात्रा में अपने गाँव को जोड़ने का आग्रह करने लगे।

"दरिद्रनारायण की फीस दिलानी होगी, पठान साहब!" विनोबा ने विनोद किया।

"सारे गाँव की तरफ से कुछ कहना मेरी ताकत के बाहर है। लेकिन अगर गाँववालों ने अपना हिस्सा नहीं दिया, तो मैं अपनी पूरी जमीन अर्पण कर दूँगा।"

गुमगाँव की सभा में उस दिन पठान साहब ने ललकारा, "मैं तो विनोबा से वचन-बद्ध हूँ। दरिद्रनारायण की झोली में आप लोग अपना भूभाग दें, न दें, मैं तो अपनी जमीन अर्पण करने का वादा कर चुका हूँ। मुझे आशा है कि सत्याग्रह-आन्दोलन में जो गुमगाँव अग्रणी रहा, वह भूदान में भी नहीं पिछड़ेगा।"

और, एक-डेढ़ घंटे तक भूदान की वर्षा होती रही। सैकड़ों ने दिया। वह सारा दृश्य बड़ा ही हृदयस्पर्शी था।

अव्यक्त अधिक प्रभावी : ९ :

उस दिन सुरखी में पड़ाव था। सभा में केवल चार एकड़ का भू-दान प्राप्त हुआ था। सभा समाप्त हुई और बाबा अपने निवास पर आकर उपनिषदों के चिन्तन में तल्लीन हो गये। इतने में ६ मील दूर के गाँव से एक भाई आये। खेत में काम करते समय उन्होंने सुना था कि सुरखी में कोई बाबा आये हैं, जो गरीबों के लिए जमीन माँगते हैं। कहने लगे कि जमीन देने आया हूँ और अपनी छह एकड़ में से एक एकड़ लिखा गये।

बाबा पुनः चिन्तन में लीन हुए ही थे कि दूसरे एक भाई आये और बावन एकड़ का दान-पत्र लिख गये। ये भाई भी किसी दूर के गाँव से अभी-अभी आ पहुँचे थे।

बाबा सोचने लगे, किसकी प्रेरणा से यह सब हो रहा है? जिन्होंने भाषण सुना, उन्होंने केवल चार एकड़ जमीन दी। जिन्होंने न भाषण सुना, न प्रार्थना में शरीक थे, वे दूसरे गाँवसे आकर तिरपन एकड़ का दान दे गये!

बाबा ठीक ही तो कहते हैं कि व्यक्त से भी अव्यक्त अधिक प्रभावी होता है!

बच्चों को आलसी नहीं बनाना चाहता : १० :

सागर जिले का आखिरी पड़ाव। रास्ते में एक गाँव में ग्रामवासियों ने रोका। सभा हुई। विनोबा ने भूदान का विचार समझाया। कुछ दान-पत्र पहले से जमा थे। वे अर्पित किये गये।

एक वृद्ध सज्जन उठे, "बोले; अपनी छह एकड़ भूमि सारी-की-सारी अर्पण करना चाहता हूँ। स्वीकार हो।"

विनोबा ने कुछ जानकारी हासिल करना उचित समझा।

"फिर आप क्या करेंगे?"

"मैं राज हूँ। मजदूरी करके पेट भरता हूँ। उसीमें से बचाकर जमीन खरीदी थी।"

"बाल-बच्चे हैं न?"

"जी, तीन हैं।"

"उनके लिए कुछ नहीं रखियेगा।"

"मुझे उन्हें आलसी नहीं बनाना है। मैं सब सोच-समझकर दे रहा हूँ। स्वीकार किया जाय।"

इस स्वयं-स्फूर्त दान को और उसके दाता को लोग निहारते ही रह गये।

बाबाजी ने भी : ११ :

जिस दिन से विनोबाजी ने उत्तर प्रदेश में प्रवेश किया, बाबा राघवदासजी भी भूदान-आन्दोलन में तद्रूप हो गये हैं। मानो उनकी उसमें सहज समाधि लग गयी है।

उस समय वे उत्तर प्रदेश की विधान-सभा के सदस्य भी थे। लोगों के पास जमीन माँगने जाते, तो झोली भर-भरकर ले आते। कोई बाबाजी से यह नहीं पूछता था कि आपने कितनी दी; क्योंकि सभी जानते थे कि बाबाजी के पास सिवा विभूति के और क्या हो सकता है!

परंतु बाबाजी को अखरने लगा। विधान-सभा से कुछ रकम मिलती थी। उसीमें से कुछ रुपया बचाकर उन्होंने जमीन खरीद ली और भूदान-यज्ञ में अपना हविर्भाग भी अर्पित किया।

उनके इस उदाहरण ने औरों को भी प्रेरणा दी। भूदान-आन्दोलन के बाबाजी प्रमुख स्तंभ हैं। धारा-सभा के लिए उनसे खूब आग्रह किया गया। परन्तु उन्होंने इनकार

कर दिया। पुरी-सम्मेलन के बाद भूमि-क्रान्ति को सफल बनाने के लिए वे १९५७ तक अखंड पद-यात्रा के संकल्प से निकल पड़े हैं। अब तक तीस हजार एकड़ से अधिक जमीन प्राप्त हो चुकी है उनकी यात्रा में।

चिरगाँव का सत्संग : १२ :

आज चिरगाँव में डेरा था। दो मील दूर तक श्रद्धेय दद्दा* सैकड़ों पुरवासियों को साथ लिये बाबा को लिवा लेने आये थे। समूह में सुश्री महादेवी वर्मा तथा कविवर 'दिनकर' भी थे।

रास्तेभर कीर्तन-भजन का अद्भुत आनन्द रहा।

द्वार पर जलकलश, तिलक, आरती, श्रीफल आदि सभी विधिवत् हुआ। भूमि का षष्ठांश भी समर्पित किया गया और बापू† ने अपना हिंदी गीताअनुवाद भी विनोबाजी को विधिवत् समर्पित किया। तेलंगाना से पू० विनोबाजी ने इसके लिए प्रस्तावना लिख भेजी थी। ऊपर अपने कमरे में पहुँचते ही विनोबाजी ने बापू को भी अपने पास बुला लिया और फिर उनका हिंदी गीता-अनुवाद लेकर बैठ गये।

स्थितप्रज्ञ के श्लोक एक-एक करके बारीकी से देखने

---

* श्री मैथिलीशरणजी गुप्त।

† श्री सियारामशरणजी गुप्त।

लगे। एक घंटे तक उन अठारह श्लोकों पर विचार-विनिमय हुआ।

सायंकाल प्रार्थना में नित्य की भाँति संस्कृत के ही श्लोक पढ़े गये। प्रार्थना समाप्त हुई।

विनोबा अब प्रवचन शुरू करेंगे, इस आशा से लोग ध्यान-पूर्वक उनकी ओर निहारने लगे। किंतु प्रवचन शुरू करने से पहले विनोबा ने गीतानुवाद में से स्थितप्रज्ञ के उन अठारह श्लोकों का पाठ सुनाया और दूसरे रोज की प्रार्थना में भी वे हिंदी श्लोक ही गाये गये। तब से-भारत भर में जहाँ हिंदी जाननेवाले होते हैं, अक्सर वे ही श्लोक गाये जाते हैं।

सभा शुरू होने के पहले दद्दा ने भूदान-यज्ञ के पुरोहित के स्वागत में लिखी गयी अपनी विशेष रचना भी पढ़ सुनायी। लेकिन इतने से दद्दा को संतोष कहाँ ?

भूदानविषयक गीतों का एक नूतन संग्रह ही उन्होंने प्रकाशित करवा दिया और उसकी सारी आय भी उन्होंने संपत्तिदान में अर्पित कर दी।

गाँव की लाज : १३ :

चिरगाँव से ६ मील !

गाँव का नाम था बड़ागाँव। पर यथार्थ में वह बड़ा

नहीं था। सभा में पास-पड़ोस के देहातों से लोग आ गये थे। दान-पत्र भी मिला, पर इस गाँव के एक भी काश्तकार ने दान नहीं दिया। बाबा ने कहा, "मेरा पूरा दिन यहाँ बीत गया, पर इस गाँव से मुझे खाली हाथ लौटना पड़ रहा है। खैर! मेरा विश्वास है कि आपने आज नहीं दिया, तो आप आगे जरूर देनेवाले हैं।"

साँझ हो गयी थी। एक चमार दौड़ता हुआ आया और कहने लगा, "आज मेरे गाँव में ऋषि पधारे हैं। खाली हाथ लौटें, यह मैं नहीं देख सकता। मेरे पास जो भी थोड़ा-सा है, वह सब अर्पण करता हूँ।" उसने नजराना भरकर अभी-अभी भूमिधर के अधिकार प्राप्त किये थे। अपना अधिकार-पत्र और दान-पत्र अर्पण करके वह चला गया। गाँव की लाज उसने रखी। ऋषि को खाली हाथ लौटने नहीं दिया।

चौथे और बड़े भाई का भाग : १४ :

आगरा के प्रसिद्ध 'शिरोमणि' परिवार को कौन नहीं जानता? बाबा का प्रवचन जमुना के किनारे हुआ। बाबा ने कहा, "तीन भाई हैं, तो मुझे चौथा भाई मानिये। चार हैं, तो पाँचवाँ मानिये और मेरा हिस्सा दीजिये।"

शाम को तीनों भाई माँ के पास बैठे। विनोबा की बात

सुनायी। उन्नीस सौ बीघा जमीन थी। माँ ने कहा, "बाबा ठीक तो कहते हैं बेटा! उन्हें चौथे और बड़े भाई का भाग मिलना चाहिए।"

तीनों भाई बाबा को पाँच सौ एकड़ का दान-पत्र दे आये और बाबा के स्नेह-बन्धन में बँध गये।

हमारा तो बिना जमीन के ही चल जाता है : १५ :

दिल्ली के पहले गाजियाबाद में मुकाम था। यहाँ की सभा बड़ी अच्छी रही। दान भी ठीक-ठीक मिला। रात को बाबा अपने स्वाध्याय में लग गये थे कि एक बहन आयीं। बाबा का दरबार तो सबके लिए खुला रहता है। उस बहन ने बाबा को प्रणाम किया और कहा, "मेरे पति वकील हैं। वकीली से हमारा निर्वाह अच्छी तरह चल जाता है। ग्यारह एकड़ जमीन हमारे पास है। कभी काम आयेगी, यह सोचकर इकट्ठी कर रखी थी, पर उसके बिना भी हमारा चल जाता है। मेरा खयाल था कि आप बड़ों से ही माँगते हैं। पर अभी आपका भाषण सुना, जिससे विचार की स्पष्टता हुई। हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप हमारा यह ग्यारह एकड़ का दान स्वीकार करें।"

'गीता-प्रवचन' का प्रसाद लेकर वह बहन लौट गयीं।

राष्ट्रपति का आशीर्वाद : १६ :

राजघाट पर विनोबाजी की वह पहली सभा थी। राष्ट्र-पति ने विनोबाजी का स्वागत किया। सारे राष्ट्र की ओर से ही था वह स्वागत! फिर अपनी ओर से राष्ट्रपति ने भी भूदान-यज्ञ में आहुति अर्पण की। उन्होंने नम्रतापूर्वक घोषणा की, "विनोबाजी, मेरी अपनी जमीन तो अब शायद ही हो, परन्तु लड़कों के पास उनकी अपनी है। आप उसमें से जितनी और जैसी जमीन आवश्यक समझें, स्वीकार करने की कृपा करें।"

क्या यह आशीर्वाद सारे राष्ट्र की ओर से नहीं था?

केवल चौथे भाग का स्वीकार : १७ :

राजघाट पर विनोबाजी से मिलने के लिए मध्य-प्रदेश से एक गृहस्थ श्री पालीवालजी अपनी सहधर्मिणी के साथ आ पहुँचे।

अपनी सारी जमीन, अड़तालीस एकड़ का दान-पत्र उन्होंने विनोबाजी को अर्पण कर दिया। संबंधित सारे कागजात, नक्शे वगैरह सब लेते आये थे।

विनोबाजी ने उनकी पत्नी को बुलाकर पूछा, तो उस देवी ने भी अपनी सहमति प्रकट की।

"आपकी कितनी संतानें हैं ?" विनोबाजी ने पूछा।

"तीन लड़के हैं।"

"निर्वाह का साधन जमीन के सिवा भी कुछ है ?"

"जी नहीं।"

"तो मुझे चौथा हिस्सा, बारह एकड़ का दान-पत्र लिख दीजिये। बाकी का आप प्रसादरूप ले लीजिये।"

उस दंपति ने वह प्रसाद ग्रहण किया और बाबा के आशीर्वाद के साथ विदा ली।

विचार तेजी से फैलता जा रहा है ! : १८ :

करहल एक छोटा-सा गाँव है। यहाँ का कार्यक्रम एकाएक तय हो गया था। यहाँ एक भाई ने अपनी सारी जमीन याने चार एकड़ दे दी। उससे प्रेरणा पाकर एक ने, जो पाँच एकड़ का इरादा कर रहा था, दस एकड़ जमीन दे दी। दूसरे ने ग्यारह का इरादा किया था, किन्तु बीस एकड़ दे दी। शाम को भोजन से लौटते समय एक भाई मिले। वे प्रवचन में नहीं आ सके थे, परन्तु दान देने का इरादा था। अपनी दूकान बढ़ाकर (बन्द करके) घर लौट रहे थे। हम लोग उनकी दूकान पर पहुँचे। अत्यन्त श्रद्धापूर्वक बही-खाता निकालकर जमीन की विगतें बतायीं और अपनी सारी-की-सारी दस एकड़ जमीन का दान-पत्र भर दिया।

बिना पूर्व सूचना तथा योजना के इस छोटे-से गाँव में पड़ाव रहा, और लोगों ने सहसा ६०-६२ एकड़ जमीन भूदान में समर्पित कर दी।

भूदान का विचार हवा में कैसी तेजी से फैलता जा रहा है!

केवल 'प्रसाद' की माँग ! : १९ :

इटावा जिला-बोर्ड के अध्यक्ष ठाकुर रघुपति सिंह सारे जिले में हमारे साथ रहे। गांधी-पुण्य-तिथि पर इटावा में विनोबा का प्रार्थना-प्रवचन जब समाप्त हुआ, तो रघुपति सिंह बोलने के लिए खड़े अवश्य हो गये, पर बोल बड़ी मुश्किल से पाये। आँखों से धारा बहने लगी, "विनोबाजी! हम दो भाई हैं। दस एकड़ जमीन है। वह सारी आपको अर्पित है। हमारे उदर-निर्वाह के लिए आप जितनी उचित समझें, हमें प्रसाद स्वरूप दे दें।

हृदय-परिवर्तन : २० :

आन्दोलन के आरम्भ में कम्युनिस्ट मित्रों का विरोध रहा। बलिया जिले में उन्होंने पू० विनोबाजी से कुछ सवाल पूछे, जिनका समाधान किया गया। आजमगढ़ में उन्होंने एक मान-पत्र में कहा कि "हम आपके मार्ग से सहमत तो

नहीं हैं, परन्तु आप अपना प्रयोग आजमा लें, हम रुकावट नहीं पैदा करेंगे।"

मैनपुरी जिले में एक कदम आगे और बढ़ाया। कलेवा (जलपान) के लिए बाबा एक देहात में रुके थे। जिले के कम्युनिस्ट नेता बाबूलालजी पालीवाल अपने देहाती मित्रों के साथ बाबा के दर्शन के लिए पहुँच गये। बड़ी ही नम्रतापूर्वक उन्होंने अपना दो एकड़ का दानपत्र भरवाने की प्रार्थना की और आगे सहयोग देने का आश्वासन भी दिया।

और आंध्र में तो इन मित्रों ने पू० बाबा एवं सहयात्रियों का आतिथ्य भी किया, जमीन भी दी, और आगे भी सहयोग का आश्वासन दिया!

इस तरह विरोध और मान-पत्र के बाद कम्युनिस्ट मित्रों ने दान-पत्र, आतिथ्य, और सहयोग देना भी शुरू किया है।

दक्षिण की पहली भेट : २१ :

पत्र, तार आदि से भी अब दान-पत्र आने लगे हैं। बंगलोर के एक मुसलमान भाई जनाब सैयद हुसेन ने अपनी एक हजार एकड़ जमीन का दान-पत्र पूज्य राजेन्द्र बाबू के पास उनके जन्म-दिन के अवसर पर यह लिखकर भेज दिया कि विनोबाजी को उत्तर-भारत में ही जमीन मिल

रही है, दक्षिण के भूदान का आरम्भ करने की दृष्टि से मेरी यह भेंट विनोवाजी स्वीकार करें।

पंजाब का प्रायश्चित्त : २२ :

एक रोज दोपहर के समय एक भाई को लेकर श्री जलेश्वरभाई कमरे में आये। उस व्यक्ति ने अत्यन्त नम्रतापूर्वक एक दस्तावेज पू० विनोवा के सामने रखी। दो सौ एकड़ भूमि का वह दान-पत्र था। ये भाई हिसार से यहाँ भूदान देने आये थे।

"मैं चाहता हूँ कि आप पंजाव आयें। दस हजार एकड़ भूमि आपकी सेवा में देना चाहता हूँ। परन्तु इसके पहले कि मैं किसीसे भूदान माँगने जाऊँ, मुझे अपनी ओर से भी कुछ हविर्भाग देना चाहिए। एक माह पहले ही यह जमीन मिली है। मैं इसे किसी अच्छे काम में लगाने की चिन्ता में था। बहुत सोचने पर मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि भू-दान के सिवा और अच्छा उपयोग कोई नहीं हो सकता, इसलिए यह सारी जमीन आपको देने आया हूँ।"

पंजाव-सरकार ने पश्चिमी पंजाब से पूर्वी पंजाव में आये हुए निर्वासित हरिजन भाइयों के लिए जमीन देने का वादा श्रीमती रामेश्वरी देवी नेहरू के पास तथा पू० विनोबाजी के पास किया था। फेहरिस्तें बनी थीं।

राजघाट पर विनोबाजी ने पंजाब-सरकार का अभिनन्दन भी किया था। परन्तु, कारणवश पंजाब-सरकार उस वचन को पूरा न कर सकी। वह घाव रामेश्वरीजी तथा विनोबाजी, दोनों के हृदय में गहरा था; परन्तु, विनोबाजी की श्रद्धा थी कि भगवान् मार्ग निकालेगा।

पंजाब के इस भाई ने अंशमात्र ही क्यों न हो, पंजाब सरकार के उस वचन की पूर्ति का आज मानो प्रायश्चित्त भी कर दिया।

दो बीघा दो लाख के समान : २३ :

बरहज जाते हुए उस रोज विनोबा हमारे सहयात्री श्री हरीश भाई के गाँव में पाँच मिनट के लिए रुके। गाँव की स्त्रियों ने मंगलगीत गाये। आरती की। हरीश भाई की माताजी आगे आयीं। प्रणाम किया। कुछ कहना चाहती थीं, लेकिन उनका कंठ भर आया। बाबा ने पूछा, "क्या कहना चाहती हो?"

बोलीं, "कुल बारह बीघा जमीन है। घर में पाँच आदमी हैं। आप छठे हुए, दो बीघा स्वीकार करने की कृपा करें।"

शाम को प्रार्थना-प्रवचन में विनोबा ने कहा, "मेरे लिए ये दो बीघा दो लाख बीघे के समान हैं। यह उस माता का आशीर्वाद है, मेरे इस काम के लिए।"

माँगत आवै लाज

गोरखपुर से आगे के पड़ाव पर जाते समय हमारी सामान की गाड़ी के साथ एक हरिजन भाई चल रहे थे। वे हमारी गाड़ी के पथ-प्रदर्शक थे। बहुत संकोच से उन्होंने एक भाई से पूछा, "क्या मैं भी कुछ भूमि-दान कर सकता हूँ ? मेरे घर बारह आदमी हैं। पाँच वीघा जमीन है। विना मजदूरी किये तो इतने लोगों का निर्वाह हो नहीं सकता। तो लगता है कि मैं भी दूँ। पर एक-दो वीघा देने में संकोच होता है कि इतना कम क्या दूँ ! कुछ सूझता नहीं। आप सलाह दीजिये।"

वे क्या जवाब देते ? उनका मस्तक उसके चरणों में झुक गया। यह है उदार, सहज तपस्वी महान् भारत ! उस भाई के संतोष के लिए चन्द डिसमल जमीन विनोबाजी ने स्वीकार कर ली।

और उस गाड़ीवान के साथ भोजन के समय जब उन भाई ने इस पथ-प्रदर्शक के महान् दान की बात की, तो उन्होंने कहा, "मैं भी दान-पत्र लिखाऊँगा।" उसने भी अपने प्रेम-प्रतीक के रूप में अपनी एक एकड़ में से एक डिसमल जमीन लिखा दी।

फरैंदा में हमारे कुमार सहयात्री गौतम बजाज मंगरू नामक एक भाई को विनोवाजी के पास ले आये। विनोवा के कमरे में मिलनेवालों की भीड़ लगी थी। कोई जमींदार थे, कोई धनवान् थे, कोई मिल-मालिक थे। गौतम भैया ने शिकायत की, "बाबा, इस भाई के पास केवल इक्कीस डिसमल जमीन है। बहुत समझाने पर भी नहीं मानते और सब-की-सब देना चाहते हैं।" सर्वस्व-समर्पण करनेवाले अपने इस महान् दाता की ओर विनोवा ने कृतज्ञता-भरी प्रसाद-मुद्रा से देखा। उस भाई ने विनोवा के चरण पकड़ लिये। कहा, "महात्माजी, मेरी यह तुच्छ भेंट स्वीकार कर लीजिये।"

बाबा ने कहा, "फिर तुम्हारे लिए तो कुछ भी नहीं बचेगा।"

उसने कहा, "आखिर मुझे कारखाने की नौकरी तो करनी ही पड़ती है। इतनी जमीन से मेरा निर्वाह नहीं होता। घर में पाँच-सात आदमी हैं।"

"तुम देना चाहते हो, यह तो बहुत अच्छी बात है, पर यह तुम अपने पास ही रहने दो।" वह नहीं माना, विनोवा ने आग्रह किया, तो रोने लगा। आखिर विनोवा ने दान

स्वीकार किया और उस पर लिख दिया, "इस मनुष्य के घर की हालत देखते हुए यह जमीन इन्हें प्रसाद-रूप वापस देनी है। इनके आग्रह से इनके समाधानार्थ हमने ली है।"

मंगरू ने गद्गद हृदय से उस प्रसाद को ग्रहण किया। पुनः चरणों में माथा टेका। उसकी धन्य-मुद्रा से सारा वातावरण आलोकित हो गया।

सबै भूमि गोपाल की : २६ :

मँगरौठ हमीरपुर जिले का एक पुरुषार्थी गाँव है। अब तक के किसी भी राष्ट्रीय आन्दोलन में वह पीछे नहीं रहा। फिर इस भूदान-आन्दोलन में वह भला कैसे पीछे रहता! विनोवा उस गाँव में पहुँच भी नहीं पाये थे। गाँव से दो मील दूर, जहाँ से मार्ग था, सब लोग दर्शन के लिए पहुँच गये थे। कलेवे के लिए जैसे भगवान् रामचन्द्र को कोल-किरातों ने अपना पत्रम्-पुष्पम् भेट किया था, वैसे ही ये लोग भी अपनी श्रद्धांजलि ले आये थे—एक सौ एक एकड़ का दान! विनोवाजी ने उसे स्वीकारते हुए अपने छोटे-से प्रवचन में एक विचार इन लोगों के सामने रखा, "सबै भूमि गोपाल की।' मुझे थोड़ा-थोड़ा क्यों देते हैं? सारी जमीन सारे गाँव की ही क्यों नहीं कर देते?" बस!

उस पहाड़ी रास्ते को लोगों ने काटकर फूल-पत्ती,

झंडियों, रंगावली आदि से सजाया था । बाबा रास्ते का निरीक्षण करते हुए आगे बढ़ने लगे और ग्रामवासी अपने गाँव लौटकर सोचने लगे कि हमारा कर्तव्य क्या है ? दीवान शत्रुघ्न सिंह ने इस गाँव की तन-मन से सेवा की है । दीवान साहब हमारे साथ ही आगे के पड़ाव पर आये थे । लोगों ने बुलावा भेजा—वे रात को ग्यारह बजे घर पहुँचे, तो सारा गाँव उनकी प्रतीक्षा में जाग रहा था । गाँववालों ने अपना विचार दीवान साहब से कहा । वे भी यही चाहते थे । दान-पत्र लिखे गये और सबकी ओर से एक अधिकार-पत्र दीवान साहब को दिया गया कि वे विनोबाजी के चरणों में जाकर सारी भूमि अर्पित कर आवें ।

आज मँगरौठ में कोई भूमिहीन नहीं है, "जाचक सब अजाचक" जो हो गये हैं । दूर-दूर से, विदेशों से भी लोग मँगरौठवासियों को देखने के लिए आते हैं ।

उस दिन के बाद, कोई गाँव, कोई सभा ऐसी नहीं, जहाँ विनोबाजी ने मँगरौठ का स्मरण न किया हो । विनोबा लोगों से पूछते हैं, "क्या मँगरौठ किन्नर या गंधर्वों का गाँव है ? क्या वहाँ किसी और प्रकार के लोग रहते हैं ? वहाँ के लोग भी हम जैसे ही हैं । फर्क इतना ही है कि वहाँ एक सेवक काम कर रहा है, जिसका असर वहाँ के लोगों पर है ।"

गाँव को आदर्श बनाने के लिए विनोबाजी के मार्ग-दर्शन में काम शुरू हो गया है।

कोई बे-जमीन नहीं रहा : २७ :

जौनपुर जिले में एक पड़ाव पर एक नया अनुभव हुआ। पड़ाव चार से मील दूर टिकारडी नामक गाँव था। विनोबाजी तो वहाँ गये नहीं थे, पर कार्यकर्ताओं ने विनोबाजी का विचार उन लोगों को समझाया था।

बत्तीस घरों के उस गाँव में बीस तो जमीनवाले थे और बारह बे-जमीन। अपने बे-जमीन भाइयों को जमीन देने की बात जब उन्हें समझायी गयी, तो जमीनवालों ने मिल-कर गाँव के बे-जमीनों के लिए सैंतीस एकड़ जमीन इकट्ठी कर दी। अब उस गाँव में कोई भी बे-जमीन नहीं है।

जुलूस बनाकर वे विनोबाजी से मिलने आये। विनोबाजी को उन लोगों से कुछ कहना नहीं पड़ा। कार्यकर्ता ठीक ढंग से विचार समझायें, तो क्या हो सकता है, इसका यह एक उदाहरण है।

सुदामा के तंदुल : २८ :

रात के साढ़े आठ बज गये थे। विश्राम की तैयारी थी कि इतने में एक किसान हाँफता हुआ विनोबा के पास

पहुँचा। सकुचाता हुआ वह झुक गया। विनोबा ने उसकी ओर देखा। तब दोनों हाथ जोड़कर उसने कहा, "महाराज, मैं आपकी सभा में नहीं आ सका।" आगे कुछ बोलना चाहता था, पर संकोच हो रहा था। विनोबा ने अत्यंत स्नेह-भाव से पूछा, "कहाँ रहते हो?"

"पाँच मील दूर एक गाँव में।"

"क्या करते हो?"

"काश्तकार हूँ महाराज।"

"तो क्या कुछ गरीव के लिए लाये हो?"

"जी हाँ, महाराज, मेरे पास कुल सात वीघा जमीन है। दो वीघा देने आया हूँ।"

भूदान-यज्ञ से कोई गरीब नहीं बनेगा : २६ :

अमेठी सुल्तानपुर जिले की एक रियासत है। इसके राणा रणंजय सिंह के पूर्वज एक हजार बरस पहले यहाँ आये थे। ये आमेर (जयपुर) के राजवंश के वंशज हैं। रियासत में पहले तीन सौ छब्बीस गाँव थे, जिनमें से छब्बीस गाँवों का राणा ने सार्वजनिक कार्य के लिए ट्रस्ट कर दिया है। अब उनके पास तीन सौ गाँव ही रह गये हैं। जिले में कुल पचीस सौ गाँव हैं। विनोबाजी ने कहा, "मैं आपको तीन सौ गाँवों का राणा नहीं बनाना चाहता।

चाहता हूँ कि आप अपने जिले के पचीस सौ गाँवों के राणा बनें।"

राणा स्वयं विद्वान् हैं, संस्कृत का अच्छा अध्ययन है। नित्य वेदों का स्वाध्याय करते हैं। निर्व्यसनी हैं। मांस-मदिरा का सेवन तो क्या, पान तक नहीं खाते। भावनाशील भक्त-हृदय हैं। विनोबाजी ने उन्हें सचमुच राणा बनने की तरकीब बताते हुए कहा, "आप अधिक-से-अधिक दान दीजिये और भिक्षापात्र लेकर निकल पड़िये। जिस कुल में जो गुण होते हैं, उनका असर उस कुल पर रहता है। इस बात का दुःख नहीं होना चाहिए कि राज्य जा रहा है। बेटा कारोबार सँहालने लायक होने पर पिता उसे सब सौंप देता ही है। लोकप्रिय राजाओं ने अपनी प्रजा को पुत्रवत् माना, अपने को 'लोक-सेवक' माना। आप भी सेवक के नाते काम करेंगे, तो प्रजा के हृदय में प्यार का स्थान पायेंगे। इस भू-दान यज्ञ के कारण कोई भी व्यक्ति गरीब नहीं रहेगा। चाहे गरीब हो या धनिक, जो श्रम करेंगे, वे सब श्रीमान् बनेंगे।"

राणाजी ने अपनी ओर से पहली किस्त के रूप में दो हजार एकड़ जमीन दान में दी। बनारस पहुँचने पर उनकी ओर से और एक हजार एकड़ भूमि का दान मिला।

सारी जागीर

हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध रचनात्मक सेवक पंडित धर्मदेवजी शास्त्री के प्रयत्नों से विनोबाजी को पाँच हजार बीघा की जागीरदारी महंत श्री ऊधोदासजी (ग्राम दशालनी, तहसील रोहड़ू, जिला महासू, प्रदेश हिमाचल) ने दान कर दी, जिसमें दो तो पूरे गाँव ही हैं। इस दान से हिमाचल प्रदेश में एक नया ही वातावरण खड़ा हो गया है और भूदान-यज्ञ को खूब प्रगति मिली है।

प्रस्तुत दान के सिलसिले में शास्त्रीजी ने जो दो पत्र लिखे हैं, वे स्वयं इस पावन घटना को स्पष्ट कर रहे हैं।

—१—

श्रद्धेय श्री विनोबाजी,

मैं कल शाम रोहड़ू से पैदल आश्रम आया हूँ। सौ मील के पैदल सफर से हमें कुछ भी थकान मालूम नहीं हुई, क्योंकि भूमि-दान-यज्ञ में नयी प्रेरणा सामने आयी है।....

ईश्वर कहाँ, किस प्रकार प्रेरणा देता है, वही जानता है। महन्त ऊधोदासजी को जो अंतःप्रेरणा हुई है और वह भी ११ सितम्बर को, यह ईश्वर पर अविश्वास करनेवालों के लिए चुनौती है। महन्तजी की आयु केवल २८ वर्ष की है। यह जागीर मन्दिर श्री रघुनाथजी के नाम है।

ये ही पूरे स्वामी हैं। इस जागीर में कुल पाँच हजार बीघा भूमि है, जिसमें करीब दो हजार बीघा बंजर है। सारी जागीर में दस से अधिक मौरूसी काश्तकार नहीं हैं। प्राय: काश्तकार गैर मौरूसी हैं, जो तीन साल के पट्टे पर रखे जाते हैं। जागीर की भूमि के अतिरिक्त एक लाख रुपयों से अधिक के पक्के मकान हैं। रोहडूवाला मकान इतना बड़ा है कि उसमें बढ़िया संस्था चल सकती है। रोहडू की ऊँचाई करीब पाँच हजार फुट है। यह स्थान पाव नदी के किनारे सुरम्य घाटी में है। सामने ही नहीं, चारों तरफ हिमालय का मनोरम दृश्य है।

रोहडू हिमाचल-प्रदेश के महासू जिले की तहसील है। यहाँ तहसीलदार, मैजिस्ट्रेट, थाना, डाकखाना तथा मिडिल स्कूल है। रोहडू ग्राम की आबादी पाँच सौ की है, परन्तु आसपास के ग्रामों की कुल आबादी पचास हजार से अधिक है, जो बीस मील चारों ओर फैले हुए छोटे-छोटे पहाड़ी ग्रामों में रहती है।

महन्त ऊधोदासजी ने आपको अपनी सारी जागीर दे दी है। महन्तजी केवल एकसठ बीघा एक बिस्वा भूमि और एक मकान ही चाहते हैं। यह भी वे आपके द्वारा ही लेना चाहते हैं। मैंने उन्हें कहा है कि ऐसा होना संभव है।

विनीत—धर्मदेव शास्त्री

—२—

प्रिय श्री भारतीयजी,

अब तो दरिद्रनारायण के लिए सारी जमीन मिल गयी। "सर्वस्वं ब्राह्मणस्येयं यत्किञ्च जगतीतले।"

इन जागीरों का ठीक से वितरण हो जायगा, तो हिमाचल प्रदेश में ऐसी अनेक अन्य जागीरों का दान मिलने की पूरी आशा है। मैं दान-प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील हूँ।

मैं जब रोहड़ू गया, तो महन्त ऊधोदासजी दान-पत्र पर हस्ताक्षर करके ऐसे प्रसन्न हुए, जैसे कन्या को बिदा करके माता-पिता निश्चिन्त हो जाते हैं। कालिदास ने अभिज्ञानशाकुंतल नाटक में कण्व ऋषि के मुंह से कहलवाया है :

अर्थो हि कन्या परकीय एव, तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ॥४-२२॥

महन्तजी की ऐसी ही स्थिति थी। मुझे तो स्पष्ट दीखता है कि पू० विनोबा का कार्य साक्षात् नारायण का कार्य है। यह तो होकर रहेगा।

स्नेहाधीन
धर्मदेव शास्त्री

मुरादाबाद जिले में चौधरपुर नामक छोटा-सा देहात है। छोटा गाँव हो, बड़ा गाँव हो, विनोबा हर जगह एक रोज ठहरते हैं। यहाँ भी एक रोज मुकाम था। तम्बुओं में डेरा था। रसोई आदि भी साथियों ने ही बनायी थी। हमेशा की तरह शाम को प्रार्थना हुई, प्रवचन हुआ। आस-पास के देहातों से भी काफी लोग आ गये थे, पर दान नहीं के बराबर मिला। बाबा ठीक समय पर सो गये, हम लोग भी १०-१०॥ बजे सो गये।

रात को १२ बजे बैलगाड़ी में बैठकर रामचरण नामक एक भाई आये। इनके गाँव से भी कुछ लोग सभा में आये थे। अपने गाँव लौटकर उन्होंने बताया था कि एक फकीर गरीबों के लिए जमीन माँगता घूम रहा है। तो रामचरणजी गाड़ी में बैठकर हम लोगों को खोजते-खोजते आये। भाग्य से हमारे यहाँ वही भाई जग रहे थे, जो दान-पत्रों का काम देखते हैं। रामचरणजी को दोनों आँखों से सूझता नहीं था। दान-पत्र लिखाकर वे चले गये।

सबेरे रास्ते में जब बाबा कलेवे के लिए रुके, तो उन्हें बताया गया कि कैसे रात को एक अन्धे ने आकर जमीन दी।

घटना को सुनकर बाबा थोड़ी देर स्तब्ध रहे। फिर

उन्होंने कहा, "वह अन्धा नहीं था—स्वयं परमेश्वर हमें आशीर्वाद देने आये थे। उसे अन्धा समझनेवाले हम ही अन्धे कहलायेंगे।" और उनकी आँखें छलछला आयीं।

पुण्य-कार्य तो मुझे भी करना चाहिए : ३२ :

पीलीभीत जिले में माधवतांडा एक साधारण देहात है। वहाँ पर जमीन की तो मानो वर्षा ही हुई। एक भाई को खेत पर जरूरी काम से जाना था। वे सभा में नहीं आ सकते थे। उन्होंने अपने छोटे भाई से कहा कि तुम सभा में जाना और मेरी तरफ से दस एकड़ का दान-पत्र भर आना। भाई की आज्ञा शिरोधार्य कर वह आया, दान-पत्र भरवाया। फिर कहा, "भाई की तरफ से दान तो मैंने दिया, पर मैं यूँ ही लौट जाऊँ, यह अच्छा नहीं। भाई ने जितनी जमीन दी है, उतनी ही मैं भी दूँगा। पुण्य-कार्य तो मुझे भी करना चाहिए।"

और उसने दूसरा दान-पत्र अपने नाम से दस एकड़ का भर दिया। करतल-ध्वनि से वातावरण गूँज उठा।

बूढ़ी माँ का वरदान : ३३ :

विजयपुर नामक देहात की बात है। मंच सुन्दर बनाया गया था। पपीता, आलू, गुड़ आदि का फलाहार भी

हुआ। काफी लोग इकट्ठे थे। लोगों ने वावा को घेर लिया। रुकना ही पड़ा वावा को। थोड़े में उन्होंने अपना विचार समझाया और कलेवे के लिए लाये गये पपीते की फाँक लेकर लोगों को देने लगे और जमीन माँगने लगे। वावा बीच-बीच में कहते, "अरे चलो रे, यह सारा प्रसाद तुम्हारी राह देख रहा है। प्रसाद लो और गरीव के लिए जमीन दो।" एक बूढ़ी माँ भक्ति-भाव से प्रसाद लेने आयी। वावा ने पूछा, "माताजी, आपके पास कुछ है?" "हाँ, है, छह बीघा।" उसने फिर कहा, "हर कोई प्रसाद लेकर भूदान का पुण्य प्राप्त कर रहा है, मैं भी करूँगी। मेरी एक बीघा जमीन लिख लीजिये।" उसकी आँखें डबडबा आयीं—उसने आदरपूर्वक वावा के चरणों में सिर नवाया। बावा ने शाम की सभा में इसका जिक्र करते हुए कहा, "मेरे लिए वह हरि-दर्शन था। उस बुढ़िया माता ने तो भगवान् की कृपा समझी कि उसे इस यज्ञ में हिस्सा लेने का मौका मिला। परन्तु मुझे तो उस दान के रूप में उस बुढ़िया माता का आशीर्वाद ही दिखाई दिया।"

वृद्धा की श्रद्धा : ३४ :

नैनीताल जिले की वात है। कालाढूँगी नामक छोटे देहात में उस दिन हमारा पड़ाव था। देहात से आये हुए

लोग शाम को अपने-अपने गाँव लौट गये। ऐसे एक गाँव में एक वृद्धा ने सुना कि बाबा गरीबों के लिए जमीन माँगते हैं। उसकी कुछ जमीन पहाड़ पर थी, कुछ तराई में थी। वह चली और ग्यारह बजे पड़ाव पर पहुँची, तो सबको सोया हुआ पाया। सबेरे जागने पर हम लोगों ने बुढ़िया को दरवाजे पर बैठा पाया। पूछने पर मालूम हुआ कि तराई-वाली अपनी ग्यारह नाली जमीन और एक मकान इस यज्ञ में अर्पण करने की भावना से वह रात से ही प्रतीक्षा करती बैठी है, मानो भगवान् के द्वार पर ही बैठी हो।

प्रातःकाल की वेला में, विदाई के समय बूढ़ी माता का वह आशीर्वाद ही तो था इस आन्दोलन को।

वीर बालक का दान : ३५ :

एक सभा में विनोबा ने अपील की कि "दरिद्रनारायण के लिए इस यज्ञ में आहुति अर्पण करनेवाले कोई हैं?" चार-पाँच मिनट सभा में स्तब्धता रही, सब कोई एक-दूसरे के चेहरे ताक रहे थे। इतने में १०-१२ साल का एक बालक खड़ा हुआ। सबकी आँखें उसे कौतूहल से निहारने लगी। अपने आप ही सबके कान यह सुनने के लिए आतुर हो उठे कि वह क्या कहता है। उसने कहा, "मेरे हिस्से में दस एकड़ भूमि आती है; मैं अपने हिस्से की पूरी जमीन

अर्पण करता हूँ।" किन्तु दान की प्रक्रिया पूरी न हो पायी थी। बाबा ने पूछा, "क्या तुम्हारे पिताजी को मंजूर है?" उस बालक के पिताजी नहीं थे। माताजी घर पर थीं। सभा के बाद माताजी ने आकर अपने पुत्र के दान की तसदीक कर दी।

गरीब ही गरीब का दुःख जानता है : ३६ :

विन्ध्यप्रदेश की बात है। दो भाइयों के पास तीन एकड़ जमीन थी। बाबा की अपील पर इन्होंने भी आध एकड़ जमीन दान में दी।

बाबा ने कहा, "गरीब गरीब का दुःख जानता है, इसलिए वह सहज और उदारता से त्याग करता है।"

नेहरू चाचा की बरस-गाँठ के निमित्त : ३७ :

डाक से एक दान-पत्र आया। दस वर्ष का एक बालक चौथी कक्षा में पढ़ता है। भूमिदान की बातें उसने भी सुनी थीं। अपने पिताजी से उसने कहा, "हमें भी कुछ देना चाहिए।" पिताजी की भी इच्छा थी। बच्चे ने पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्म-दिवस पर इकहत्तर एकड़ का दान-पत्र भेजा। विनोबाजी के पास वह दान-पत्र भेजते

समय हमारे प्रधानमंत्री ने उस बालक के लिए कितना गौरव अनुभव किया होगा !

भगवान् विश्वनाथ का आशीर्वाद : ३८ :

सर्वोदय-सम्मेलन के लिए सेवापुरी पहुँचने के पहले पड़ाव बनारस में था। अब भूदान-यज्ञ को शुरू हुए एक वर्ष होने आया था। विनोबाजी की शुरू से कल्पना थी कि एक वर्ष में एक लाख एकड़ तक भूमि संग्रहीत हो सकेगी।

बनारस पहुँचने तक भूदान का आँकड़ा नव्बे हजार के करीब पहुँच गया। इतने में काशी-नरेश का पत्र लेकर एक दूत आ पहुँचा। पत्र में लिखा था :

"जिस महान् भावना से प्रेरित होकर आपने यह कठिन व्रत लिया और अपने उद्देश्य की पूर्ति के हेतु समस्त भारतवर्ष की यात्रा गर्मी-सर्दी से तनिक भी विचलित न होते हुए पाँव-पयादे कर रहे हैं, उसको शब्दों द्वारा व्यक्त करना संभव नहीं। उसके तो आप मूर्तिमान् स्वरूप हो गये हैं। अतः आपके दर्शन से ही लोगों को उसका वास्तविक परिचय मिलेगा। आपके शुभागमन से सभी का हृदय प्रफुल्लित हो रहा है। जन-समुदाय के सुख-सन्तोष के लिए भारतीय परंपरा के अनुकूल एक व्यवस्था की झलक लोगों को मिलने लगी है।

"बाबा विश्वनाथ के अनुग्रह से आपका यह भगीरथ-प्रयत्न सफल हो तथा—

"सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥"

और साथ में दस हजार एकड़ का दान-पत्र भी था।

उत्तर में विनोबा ने लिखा :

"प्रेम से अर्पित किया हुआ आपका भूमिदान मिल गया है। उसकी पूर्ति आप करनेवाले हैं, यह भी संदेशा हमें मिला है। हम आपसे और एक बात चाहते हैं। आपने स्वयं इस यज्ञ में अपना जो हविर्भाग दिया है, वैसा अपने मित्रों से भी दिलायें। इस तरह यह कार्य सहज गति से उत्तरोत्तर बढ़ता रहेगा।

"आपने अपने पत्र में हमारा प्रयत्न सफल होने के लिए बाबा विश्वनाथ के अनुग्रह की याचना की है। यह आपकी मेरे लिए बहुत भारी मदद हुई। मेरे इस काम के पीछे उन्हींकी प्रेरणा है और वे ही इस महान् कार्य को संपन्न करने में समर्थ हैं। मैं हूँ उनकी चरण-रज।"

और यह पावन पूर्णाहुति : ३९ :

एक लाख एकड़ के करीब-करीब अंक पहुँच गया था।

फिर भी पूर्णाहुति बाकी थी। इतने में डाक से एक पत्र मिला, जिसमें साठ एकड़ का दान-पत्र था।

गागोदा से विनोबा के चचेरे भाई ने तथा धूलिया से विनोबाजी के छोटे भाई श्री शिवाजी महाराज ने अपने परिवार की सारी जमीन, करीब साठ एकड़ का दान-पत्र भेजा था। इस तरह भूदान-यज्ञ के प्रथम वर्ष के एक लाख के मानसिक संकल्प की पूर्ति में सहज संयोग से यह अंतिम और अत्यन्त पावन पूर्णाहुति प्राप्त हुई।

वीर नारी : ४० :

मुख्यमंत्री तथा प्रान्त के अन्य नेताओं द्वारा आग्रह किये जाने पर भी चुनाव में फिर से खड़े न होने का उन्होंने निश्चय कर लिया था। इसी बीच पद-यात्रा में तार मिला। किसी जरूरी काम के लिए घर बुलाया गया था। आकर देखा कि मित्रों की भीड़ घर पर लगी हुई है। सब आग्रहपूर्वक कह रहे हैं, "आपको चुनाव में खड़ा होना हो पड़ेगा। आप सिर्फ फार्म भर दीजियेगा। बाकी सब हम लोग कर लेंगे।"

सबसे क्षमा माँगकर घर में अपने पिताजी से और सह-धर्मिणी से मिलने के लिए वे भीतर गये। कुछ सज्जन फिर भी उनके साथ हो गये। एक मित्र ने दस हजार

रुपये का एक चेक भेंट करते हुए कहा, "यदि पैसे की कठिनाई हो, तो यह तुच्छ भेंट स्वीकार की जाय। कहीं ऐसा न हो कि पैसे की असुविधा के कारण चुनाव में खड़े होने का विचार छोड़ दिया जा रहा हो। बाकी परिश्रम तो हम सब लोग करेंगे ही।" इतना कहकर वे लोग पिताजी की ओर इस आशा से देखने लगे कि कम-से-कम वे तो उनकी वकालत करेंगे।

चुनाव न लड़ने का अपना निश्चय प्रकट न करते हुए घरवालों की राय जानने की दृष्टि से उन्होंने पूछा, "मुन्नी की माँ क्या कहती है ? बाबूजी की क्या राय है ?" मित्रों की ओर से बाबूजी कुछ वकालत कर ही नहीं पाये कि इसके पहले पत्नी ने गरजकर कहा, "चुनाव में अगर खड़ा ही होना था, तो पहले क्यों नहीं सोच लिया ? क्यों इतनी बड़ी जिम्मेवारी उठायी ? क्या दोनों काम हो सकते हैं ? प्रान्तभर की भूदान की जिम्मेवारी क्या कोई मामूली बात है ? क्या दरिद्रनारायण के साथ इस तरह विश्वासघात किया जा सकता है ? सबसे कह दीजिये कि अब चुनाव में नहीं खड़े हो सकते। आपको भूदान के सिवा दूसरी बात का विचार भी नहीं करना है।"

सेवापुरी-सम्मेलन के पहले की यह घटना है। तब तो

१९५७ का आह्वान भी नहीं हो पाया था। भारतीय नारी के इस त्याग और तेज पर किसे गर्व नहीं होगा ?

अपनी वीर सहधर्मिणी के प्रति करणभाई का हृदय कृतज्ञता के भावों से भर आया।

पिताजी ने पुत्र और पुत्र-वधू, दोनों को आशीर्वाद दिया।

दिया सो दिया : ४१ :

बाबा की यात्रा पहली बार गया जिले में हो रही थी। शेरघाटी थाने के एक गाँव में एक वृद्ध किसान बाबा से मिलने आये। वे भूदान के विचार से इतने प्रभावित हुए थे कि अपनी सारी ६० एकड़ अच्छी उपजाऊ जमीन, कुआँ, मकान, फलों से लदे वृक्ष, गाय-बैल आदि पशु-धन सब-का-सब अर्पण कर दिया। उस दिन से बराबर वे बाबा के साथ यात्रा में ही रहने लगे।

"साथ में कब तक रहना चाहेंगे ? घर कब लौटना चाहेंगे ?" हम लोगों ने उनसे सहज जानना चाहा। तो उन्होंने कहा, "मैं कभी भी लौट सकता हूँ, परन्तु मैं अब अपनी जमीन पर तो नहीं लौटूँगा। वह मैंने अर्पण कर दी, अतः निर्माल्य है। बाबा के साथ रहकर उनका काम कर सकता हूँ।"

"जब तक भूमि का वितरण नहीं होता, आप उसे बाबा

की ओर से सँभालियेगा। जमीन की ठीक हिफाजत रखियेगा। वितरण होने पर फिर बाबा से मिलकर कार्यक्रम ठीक कीजियेगा।" लेकिन वृद्ध किसान उसके लिए तैयार नहीं हुए। "मैंने दे दिया, अब उस वस्तु को छू नहीं सकता।"

बहुत समझाने पर भी वे नहीं माने, आखिर उन्हें उस जमीन की जिम्मेवारी से मुक्त करना पड़ा।

विष्णु-सहस्रनाम : ४२ :

पलामू जिले के कमलेश्वर सहाय सिंह (बच्चू बाबू) के घर बाबा का डेरा था। बच्चू बाबू बड़े असमंजस में थे कि स्वागत में बाबा के योग्य क्या प्रस्तुत किया जाय। उन्हें कुछ सूझता नहीं था। उन्होंने सुन रखा था कि बाबा 'विष्णु-सहस्रनाम' सुनने की इच्छा रखते हैं, दो-चार सौ दाताओं के नाम से उन्हें संतोष नहीं होता। बच्चू बाबू को बात जँच गयी। उन्होंने प्रयत्न शुरू किया और पहली बार उनके पड़ाव पर 'विष्णु-सहस्रनाम' का पाठ बाबा को सुनाया गया। प्रार्थना-सभा में एक हजार दाताओं के नाम पढ़े गये। डेढ़ घंटे तक एकाग्र होकर बाबा वह पावन नामावली सुनते रहे।

बच्चू बाबू ने भी अपनी जमीन का षष्ठांश प्रदान

किया। संपत्तिदान में भी षष्ठांश दिया। और तब से आज तक बराबर भूमिदान के काम में रमे हुए हैं। पलामू जिले का भार अब बाबा ने उन्हींको सौंपा है।

संपूर्ण दान : ४३ :

उन दिनों बाबा डाल्टनगंज जिले के नगरउँटारी गाँव में बीमार थे। बीच में कहीं रुके बिना डाल्टनगंज जाने की बात सोची जा रही थी। बच्चू बाबू ने कहा, "रंका के महाराज आपकी प्रतीक्षा में हैं। उधर से नहीं जाइयेगा?"

बच्चू बाबू का आग्रह देख बाबा रंका गये। महाराज ने स्वरचित संस्कृत-श्लोकों से बाबा का स्वागत किया। भूदान की बात चली। बाबा ने पूछा, "कितना दीजियेगा दरिद्रनारायण के लिए?" महाराज ने कहा, "अब तक जितने कार्यकर्ता आये, जिसने जितना माँगा, लिया। आप जितना चाहें, ले लीजिये।"

"आपके पास भूमि कितनी है?"

महाराज ने सारे कागजात बाबा को भेंट कर दिये। एक लाख एकड़ परती थी, बारह हजार खुदकाश्त।

बाबा ने कहा, "परती सारी-की-सारी लिख दीजिये।"

महाराज ने लिख दी।

"खुदकाश्त का षष्ठांश लिख दीजिये।"

महाराज ने यह बात भी मान ली और दो हजार एकड़ का दान-पत्र लिख दिया।

बाबा ने कहा, "राजा साहब, आपका यह दान संपूर्ण दान है, फिर भी मेरी यह पहली किस्त है। आज तो मैं इतना लेकर जा रहा हूँ, लेकिन फिर आऊँगा और तब तक आता रहूँगा, जब तक एक भी भूमिहीन परिवार बचा रहेगा।"

हृदय-परिवर्तन और किसे कहते हैं? : ४४ :

राँची जिले में पालकोट रियासत है। रियासत के राजा लाल साहब ने अपनी खुदकाश्त जमीन का छठा हिस्सा बाबा को दान में दे दिया। परती करीब चालीस हजार थी, वह भी लिख दी! परन्तु इतने से विनोबाजी का समाधान नहीं हुआ। "हमारा काम भी आपको करना होगा"—उन्होंने कहा। राजा साहब ने मान लिया। जिला भूदान-समिति के संयोजक का भार भी सँभाल लिया और तब से आज तक गाँव-गाँव घूमकर वे दरिद्रनारायण के लिए भूदान माँगने में जुटे हुए हैं।

इस बीच बाबा के साथ संपर्क तो था ही। बाबा से हर वक्त कोई-न-कोई नयी प्रेरणा मिलती ही रहती। एक बार बाबा ने सहज भाव से राजा साहब से 'वानप्रस्थाश्रम' की पुनःस्थापना की आवश्यकता के बारे में चर्चा की।

पुरी-सम्मेलन पर बाबा के नाम राजा साहब का तार मिला—

"दशहरे के अवसर पर वानप्रस्थ ग्रहण करने की आज्ञा आशीर्वाद सहित दीजिये !"

काँचीपुरी में राजा साहब स्वयं आये थे। सम्मेलन में '५७ तक भूदान-यज्ञ संपन्न करने का ही वातावरण था। हर कोई अपनी-अपनी ओर से यथासंभव अधिक-से-अधिक करने को उत्सुक था। राजा साहब का भावुक मन ऐसे समय यों ही खामोश नहीं बैठ सकता था। किन्तु वे तो पहले ही निश्चय कर चुके थे—उन्होंने अपना निश्चय पूज्य बाबा से तथा श्री जयप्रकाशजी से निवेदन कर दिया।

काँची की सभा में जयप्रकाशजी ने घोषित किया कि "राजा साहब पालकोट ने जीवन-दान दिया है।" अनेक हृदयों से प्रशंसा के उद्गार निकले।

हृदय-परिवर्तन और किसे कहते हैं ?

इसे अपना ही काम समझें : ४५ :

दरभंगा के महाराजाधिराज गंगा किनारे कुरसैला नामक छोटे-से देहात में आये और उन्होंने एक लाख बीस हजार एकड़ का दान बाबा के चरणों में अर्पण कर दिया। बाबा

ने कहा, "आपने दान दिया, यह तो ठीक किया, पर हम चाहते हैं कि इस काम को आप अपना ही काम समझें।"

राजा साहब ने नम्रतापूर्वक कहा, "मुझसे जो बन सकेगा, करने के लिए हाजिर हूँ।"

दान की वर्षा : ४६ :

चांडिल में रामगढ़ के महाराज ने पहले एक लाख एकड़ का दान दिया। फिर अपनी यात्रा के दरमियान बाबा जब उनके गाँव गये, तो उन्होंने अपने सारे परिवार की ओर से अलग-अलग दान-पत्रों द्वारा और ढाई लाख एकड़ का दान दिया।

रानी साहबा ने अपने अलंकार भी भेंट किये। उन दिनों बाबा रोज श्रमदान भी करते थे। उस दिन वर्षा बहुत जोरों की थी। वैसी वर्षा में हजारों लोगों के साथ राजा साहब ने हाथ में कुदाली-फावड़ा लेकर घंटे भर श्रमदान भी किया।

त्याग की पराकाष्ठा : ४७ :

गया जिले का रेवई गाँव अपने सर्किल का राजा ही माना जाता है। हजारों की संख्या में लोग सभा में हाजिर थे। 'जयप्रकाश जिन्दाबाद', 'भूदान-यज्ञ सफल करेंगे', 'संत विनोबा अमर हों' आदि नारों से आसमान गूँज उठा था।

जयप्रकाशजी ने अपना हृदय निकालकर लोगों के सामने रख दिया और फिर वह सौजन्य की मूर्ति दान माँगने खड़ी हो गयी। भूमि की वर्षा होने लगी। लिखनेवाले थकने लगे। दशरथ नामक एक बेलदार अपने साथ जमीन के सारे कागजात लेकर आये थे। अपना सब कुछ अर्पण कर दिया उन्होंने—जमीन, घर-बार, बैल, भैंस, सब! यह दान सुनकर सारी सभा चकित हो गयी। तालियों की गर्जना ने इसका स्वागत किया। जयप्रकाशजी खुद पुलकित हो गये। सारा-का-सारा स्वीकार करें या नहीं? क्षण-भर संकोच हुआ। परन्तु बाबा के प्रतिनिधि बनकर आये थे। भूदान तो स्वीकार करना ही पड़ा। बैल, गाय, भैंस, घर आदि दाता को बाबा की ओर से प्रसादरूप लौटा दिये!

दशरथ भाई ने यह सारी जमीन अपने पसीने से कमाई थी। एक ही जून और वह भी सत्तू खाकर जमीन जोड़ी थी।

बेटे का पुण्य बेटे के साथ : ४८ :

महाकोशल में सेठ गोविन्ददासजी के नेतृत्व में एक यात्री-दल ने एक माह में छह जिलों का दौरा किया। पहले दिन अधिक जमीन नहीं मिली। वहाँ के प्रमुख कार्यकर्ता नाराज थे कि अन्य सब कामों के साथ यह भूदान की

झंझट कहाँ से आ गयी। लेकिन यात्रा में रहते-रहते चार-पाँच दिनों में ही कार्यकर्ताओं का मानस पूर्णरूपेण बदल गया और बैतूल जिले के एक प्रमुख कार्यकर्ता ने सभा में स्वयं-स्फूर्ति से घोषणा की कि "अब वे भूदान के काम में जुटेंगे और उस जिले का कोटा छह माह में पूरा कर देंगे।" छिंदवाड़ा जिले में गणेशगंज की प्राथमिक शाला के अध्यापक लखनादौन की सभा में उठ खड़े हुए और कहा, "सभा में आने के पूर्व भूदान में शरीक होने का मेरा बिल्कुल इरादा नहीं था, लेकिन अब मेरा मन बदल गया है और मैं अपनी सारी जमीन, जो छह एकड़ उन्नीस डिसमल है, भूदान में देता हूँ। शाला के वेतन से मैं अपना काम चला लूँगा।"

होशंगाबाद जिले के बरमान गाँव में सभा समाप्त होने के बाद कुँवरबाई नामक एक बहन ने अपनी कुल दो एकड़ जमीन दान में दे दी। "अब कैसे गुजर होगी ?" पूछने पर उसने कहा, "मैं दूध-दही बेचकर अपनी जीविका चला लूँगी।"

सिवनी में दाऊ महेन्द्रनाथ सिंह से छह सौ एकड़ का छठा हिस्सा यानी एक सौ एकड़ की माँग की गयी थी। उन्होंने कहा, "सौ एकड़ मैं नहीं दूँगा।"

"अच्छा तो दो-चार एकड़ कम दीजिये।"

तो उन्होंने कहा, "मैंने दो सौ एकड़ देने का तय किया है।"

इसी तरह एक सभा में एक बालक ने दान दिया, तो पिताजी खड़े हो गये और उन्होंने कहा, "मेरा भी दान लिखिये—बेटे का पुण्य बेटे के साथ, मेरा मेरे साथ!"

शिवि और दधीचि का दान : ४६ :

गया जिले के अतरी थाने में जेठियन नामक गाँव में सभा थी। बोलते-बोलते जयप्रकाशजी हृदय की गहराई में उतर गये थे। बीस दाताओं द्वारा एक सौ पाँच एकड़ के दान-पत्र भरे गये। जयप्रकाशजी ने पूछा, "क्या भगवान् बुद्ध के इस क्षेत्र में बीस ही दानी हैं? ऐसा नहीं हो सकता।" उनकी उस महान्, किन्तु नम्र मूर्ति को दान की याचना करते देखकर लोग रोमांचित हो गये। भूदान की वर्षा होने लगी। बाबू शिवधर सिंह खड़े हुए। उन्होंने कहा, "साढ़े छह बीघा।" जयप्रकाशजी ने जाहिर किया, "साढ़े छह बीघा।" एक कार्यकर्ता ने उनके कान में धीरे-से कहा कि "इनके पास कुल साढ़े छह बीघा ही जमीन है। सब दे देने पर ये क्या खायेंगे?" जयप्रकाशजी ने जाहिर किया, "इन भाई के पास उपार्जन का दूसरा साधन नहीं है। इनकी दान-भावना की मैं कद्र करता हूँ। फिर भी सिर्फ

एक बीघा रखकर साढ़े पाँच बीघा इन्हें वापस करता हूँ।"
बाबू शिवधरसिंह खड़े हुए और हाथ जोड़कर बोले, "महाराज, वापस करेंगे तो मैं अनशन करूँगा। मेरे शरीर में ताकत है। कहीं भी कमाई करके मैं पेट भर सकूँगा। आज तक इस धरती से मैंने सुख प्राप्त किया है। अब मेरे दूसरे गरीब भाइयों को वह सुख मिलने दीजिये।"

जयप्रकाशजी गद्गद हो गये। सभा भी मुग्ध हुई। जयप्रकाशजी ने उनसे कहा, "मैं आपके सामने नतमस्तक हूँ। आप शिवि, दधीचि, हरिश्चन्द्र और कर्ण के वंशज हैं। शरीर का अंश काट देनेवाले, हड्डियाँ निकालकर देनेवाले दानवीरों के वंशज हैं आप। उनका खून आपकी नस-नस में दौड़ रहा है, इसका मुझे ध्यान नहीं था। दाता की जैसी इच्छा हो। मैं दान स्वीकार करता हूँ।"

दान भी, अनुदान भी : ५० :

गया जिले के वजीरगंज में पड़ाव था। जयप्रकाशजी ने कहा, "भारत की मानवता का साक्षात्कार हो रहा है। आध्यात्मिक शक्ति का आविष्कार अपनी आँखों के सामने सिद्ध होता हुआ हम देख रहे हैं।" भाषण के बाद वे खड़े रहे, तो दान-गंगा का प्रवाह बहने लगा। शुरू में कार्य-कर्ताओं ने अब तक के प्राप्त दान-पत्र अर्पण किये। बाद

में भागवत पांडे खड़े हुए और उन्होंने तीन बीघा भूदान जाहिर किया। दूसरे एक सज्जन ने तुरन्त उठकर कहा, "१९३० से पांडेजी ने राष्ट्र के लिए असीम त्याग किया है। सिर्फ तीन बीघा ही जमीन उनकी संपत्ति है। वह भी अब भारतमाता के चरणों में उन्होंने अर्पण कर दी। उनका त्याग इस तरह अखंड चला ही है। पांडेजी के परिवार के लिए, कृपया मेरी ओर से पाँच बीघे का दान स्वीकार किया जाय।"

एक बहन की प्रेरणा : ५१ :

नडियाद के पास बोरियावी गाँव है। उस गाँव की एक बहन श्री रविशंकर महाराज के पास पहुँची और कहने लगी, "आपको दान के काम के लिए नियुक्त किया है न! फिर आप बाहर दान माँगने के लिए क्यों नहीं निकलते? मुझे जमीन दान देनी है।" उसीके कहने के अनुसार सभा का आयोजन किया गया। भूदान-यज्ञ का पूरा विचार समझाया गया। उस बहन ने अपनी ग्यारह बीघा जमीन दान में दी। इस घटना का प्रभाव श्री रविशंकर महाराज के मन पर इतना गहरा हुआ कि वे उसी रोज से तन-मन से भूदान के काम में जुट गये।

बूढ़े की बीस बीघा जमीन : ५२ :

मुनि संतबालजी सोरठ में घूमते-घूमते खाबोदर के पास एक देहात में गये। उनको लगा कि मेर-जाति के लोग क्या जमीन देंगे ? परन्तु मेर लोगों ने कहा, "हमारे गाँव में पड़ाव रखो।"

गाँव में किसीने एक बीघा दान लिखवाया, किसी ने दो बीघा। तीसरे ने तीन, तो चौथे ने चार। इस तरह मानो स्पर्धा ही शुरू हो गयी। एक वृद्ध वहाँ बैठा था। वह कहने लगा, "लिख डालो मेरी बीस बीघा जमीन।" पास ही में श्री रामभाई पाठक बैठे थे। उन्होंने कहा, "बाबाजी, आप इस बीस बीघा जमीन दान देने का अर्थ समझते हैं या आवेश में आकर लिखा रहे हैं ?" बूढ़े बाबा ने कहा, "तुम मुझे क्या समझाते हो भाई ! मैं खाने बैठा था। डेढ़ रोटी की भूख थी और मेरी थाली में सिर्फ एक ही रोटी थी। उसी समय घर के आँगन में एक भूखा आदमी आया, तो जो कुछ था, उसीमें से आधी रोटी उसको दी, तो उसमें तुम मुझे क्या समझाओगे ?"

स्वामित्व का विसर्जन : ५३ :

श्री नारायण देसाई अपनी पंचमहाल जिले की यात्रा का वर्णन लिखते हैं :

रमणिया गाँव में श्री देसाई नामक एक सज्जन रहते हैं, सात्त्विक और सेवा-भावी। जब हम उनके यहाँ पहुँचे, तो उन्होंने प्रेमपूर्वक हमारा स्वागत किया। उनकी भू-दान-सम्बन्धी कुछ शंकाएँ भी थीं, जो हमने दूर कीं। उन्होंने अपनी अट्ठाईस एकड़ जमीन में से आठ एकड़ पहले ही भूदान में दे दी थी। साठ एकड़ की एक जागीर भी उनकी थी। उस पर से भी स्वामित्व छोड़ देने का उनसे आग्रह किया गया। वे हिसाब-बही में से एक-एक खातेदार (रैयत) का नाम और विवरण सुनाने लगे।

मैंने पूछा, "फलाँ भाई की स्थिति कैसी है?" "गरीब है।" फिर आपको उसकी जमीन पर का हक छोड़ देना चाहिए।" इस पर उन्होंने कोई बहस नहीं की, दान-पत्र पर उस रैयत की जमीन का सर्वे नम्बर लिख दिया। फिर दूसरे भाई का नाम पढ़ा गया। पूछा, "इसकी स्थिति कैसी है?" "वह मध्यम स्थिति का है।" "क्या उसकी भी जमीन छोड़ना आप पसन्द करेंगे?" श्री देसाई कहने लगे, "जो जानेवाला है, उसे सम्मान से अर्पण करने में ही हमारी शोभा है। उसकी भी जमीन लिख लीजिये।" इस तरह अलग-अलग खातेदारों की मिलकर कुल साढ़े उन्तीस एकड़ जमीन पर का अपना स्वामित्व उस दिन उन्होंने छोड़ दिया। उनकी जमीन का यह करीब आधा

हिस्सा था। उनके बरामदे में बैठे हुए हिन्दोलियावासी भील हमारी बातें बहुत ध्यान से सुन रहे थे। जैसे-जैसे श्री देसाई एक-एक की जमीन पर का स्वामित्व छोड़ते थे, वैसे-वैसे वे लोग अधिकाधिक प्रभावित होते जाते थे।

नारी-चेतना का दृश्य : ५४ :

बड़ौदा जिले में श्री हरिवल्लभ परीख भूदान-यात्रा कर रहे थे। रंगपुर से २५ मील दूर, धारोली गाँव में सभा थी। दान-प्राप्ति के कार्यक्रम के बाद वहाँ के जमींदार श्री भीखूभाई शाह की पत्नी की बहन ने अपने सब गहने उतार-कर दे दिये। उस बहन से उन्होंने पूछा, "अब फिर से तो नहीं बनवाओगी?" उसने जवाब दिया, "न बनवाने के संकल्प के साथ ही यह विपत्तिरूप सम्पत्ति आपके हवाले कर रही हूँ। आज हम स्त्रियों की आँखें खुल गयी हैं।"

छोटों का दिल बड़ा होता है : ५५ :

एक दिन सबेरे राधनपुर में रविशंकर महाराज दातून करने बैठे थे। इतने में जेकड़ा गाँव के हीरजी भगत उनके पास आकर खड़े हो गये। महाराज ने पूछा, "कैसे आना हुआ?"

"कुछ नहीं, यों ही पाँव छूने आया था।"

थोड़े समय बाद भी भगत को वहीं खड़ा देखकर महाराज ने पूछा, "क्या काम था ?"

"मुझे कुछ जमीन दान करनी है।"

"तुम्हारे पास कितनी जमीन है ? कितनी दान करना चाहते हो ?"

"बारह बीघा के खेत में से चार बीघा जमीन देनी है। पर क्या आप मेरे घर नहीं आयेंगे ? घर पर सब आपकी राह देख रहे हैं।"

महाराज के साथ बहुत-से साथी थे, इसलिए उस गरीब कुम्हार पर बहुत बोझ पड़ेगा, ऐसा विचार कर वे वहाँ भोजन के लिए नहीं गये।

कुछ ही महीनों बाद महाराज फिर राधनपुर गये। उस समय भी हीरजी भगत मिलने आये।

"महाराज, मैंने वह जमीन एक हरिजन को दे दी। उस खेत में बाजरे की इतनी अच्छी फसल हुई है कि उसे देखकर मैं बहुत खुश हूँ।" महाराज ने स्मित मुद्रा में इस भूदान और वितरण पर अपनी सम्मति प्रकट की। जाते-जाते उत्साह से हीरजी भाई कहने लगे, "आपको तो मैंने चार बीघा का वचन दिया था। किन्तु इतनी थोड़ी जमीन में उस गरीब का कैसे चलता, अतः मैंने उसे छह बीघा जमीन दे दी थी।"

विनोबाजी इसीलिए तो कहते हैं कि "छोटों का दिल बड़ा होता है।"

भगवान् तो बैठे हैं न ! : ५६ :

मढ़ी-आश्रम की छात्राएँ श्री गोमती बहन तथा जुगतराम भाई के साथ भूदान-यात्रा के सिलसिले में खोजपारडी गयी थीं। बहनें घर-घर जाकर भूदान का संदेश सुनाती थीं। एक सज्जन ने अपनी छह एकड़ जमीन भूदान में अर्पण की। गाँव के दूसरे लोग आश्चर्यचकित हो गये। जुगतराम भाई ने पूछा, "भाई, तुम्हारे पास कितनी जमीन है ?" कालिदास भाई ने कहा, "छह एकड़। तीन-चार दिन पहले ही हम सब भाइयों का बँटवारा हो गया और मेरे हिस्से में छह एकड़ जमीन आती है। आज मैं अपनी सारी जमीन अर्पण करना चाहता हूँ।"

पहले लगा कि अकेले ही होंगे, इसीसे हिम्मत की। पर बाद में मालूम हुआ कि परिवार में पत्नी है और चार लड़के हैं। "अब तुम्हारा गुजर कैसे होगा ?" पूछा, तो उसने कहा, "मेहनत-मजदूरी करूँगा। भगवान् तो बैठा है न !" उसके चेहरे पर समाधान तथा प्रसन्नता के भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। दान ग्रहण करनेवाले भी गद्गद हो गये।

गोवा की आहुति

गोवा के सावई गाँव में श्री म० ल० रानडे नाम के नवयुवक प्रायमरी शाला के शिक्षक हैं। खादीधारी हैं। गांधी-विचारों पर निष्ठा है। शुरू से ही भूदान-यज्ञ की ओर आकर्षित हुए हैं। उनका एक पत्र आया था। पत्र स्वयं आहुति का महत्त्व बताता है।

"....पत्र के साथ मनीआर्डर से ५७ रु० ८ आ० भेज रहा हूँ। कुछ रोज पहले आपके द्वारा भेजी गयी 'आन्दोलन' और 'भूमिका' नामक पुस्तकों के दाम में आठ आने जा रहे हैं, आपने ये किताबें बुकपोस्ट द्वारा भेजी थीं। किताबों की कीमत के चार आने पोस्ट के जरिये भेजने को कहा था। लेकिन गोवा के डाक-टिकट भारत में चलते नहीं, इसलिए मैंने वह भेजा नहीं। आपको इसकी सूचना देना जरूरी था। लेकिन आजकल-आजकल करने में काफी देर हो गयी, इस विलम्ब के लिए दंड-स्वरूप चार आने ज्यादह भेजे हैं। कृपया स्वीकार करें। ५७ रु० पूज्य विनोबाजी के भूदान-आन्दोलन के लिए हैं। मैं एक गरीब स्कूल-मास्टर हूँ। मेरे पास दान-यज्ञ में देने के लिए जमीन नहीं है। जो कुछ थोड़ी-सी तनख्वाह पाता हूँ, उसमें से पाई-पाई करके बचायी हुई यह पूँजी है। यह सुदामा के तंदुल स्वीकार करने के लिए प्रार्थना है।"

मुझे नाम की इच्छा नहीं थी : ५८ :

हमारी बहन सत्यबालाजी भू-दान-यात्रा करती हुई गावड़ ग्राम पहुँचीं। गावड़ ग्राम अधिकतर महाजनों की बस्ती का गाँव है। सभा में जमींदार और किसान भाइयों की अच्छी संख्या थी। सत्यबाला बहन ने भू-दान की बात समझाते हुए कहा, "प्रतिष्ठा और नाम के लिए जो दान किया जाता है, वह सात्त्विक नहीं होता, देनेवाले में अहंकार और लेनेवाले में दीनता न आये, वही दान उत्तम है।"

सभा समाप्त हुई। कोई दाता आगे न बढ़े। आज नहीं देते वे कल जरूर देंगे, इस विश्वास से हमारी बहन डेरे पर पहुँचीं। इतने में वहाँ एक वृद्ध आये और कहने लगे, "आप मेरी उनतालीस बीघा जमीन दान में लिख लीजिये।" एक भाई ने कहा, "भइया, तुमने सभा में ही घोषणा क्यों न की ?" बाबा ने कहा, "मुझे नाम की इच्छा नहीं थी।"

भलाई जाग उठी : ५९ :

विमला बहन ने गया जिले में कुछ रोज पैदल-यात्रा की थी। एक देहात का अनुभव वे सुना रही थीं :

"एक रियासत से हम लोग गुजर रहे थे। बहुत छोटी

रियासत थी। साथियों ने कहा कि इस गाँव में जाना बेकार है। राजा बड़े दुष्ट हैं, शराबी हैं, जुआरी हैं, इनका हृदय-परिवर्तन क्या हो सकता है? मैंने कहा कि जनता में जनार्दन का दर्शन करने निकले हैं, बगैर दर्शन के मंदिर के बाहर से ही लौट जायँ? विनोबा का आन्दोलन महज मजाक नहीं है, मखौल नहीं है। इसके पीछे गंभीर मानव-निष्ठा की बुनियाद है। मानव-निष्ठा का अधिष्ठान है। आज मानव-निष्ठ समाज-दर्शन की और मानव-निष्ठ क्रांति की प्रक्रिया की हमें आवश्यकता है।

साथी नहीं माने, दूसरे गाँव में चले गये। मैं अकेली राजा साहब की ड्योढ़ी पर पहुँची। दोपहर का समय था। वे बरामदे में आराम से लेटे हुए थे। मैंने दरवाजा खटखटाया। पूछा गया, "कौन है?" मैंने कहा, "आपकी बहन आयी है।" जब सुना कि बहन आयी है, तो चौंक पड़े। आगे बढ़कर इस तरह देखने लगे कि कोई पागल तो दरवाजे पर नहीं पहुँच गयी। पूछने लगे कि "यहाँ तक कैसे पहुँच पायीं? गाँववालों ने तुम्हें बताया नहीं कि मैं किस प्रकार का शैतान आदमी हूँ? भला, मेरे पास किसी भले आदमी का कोई काम हो सकता है? तुम एक नौजवान लड़की हो, तुम्हारी भलाई इसीमें है कि तुम लौट जाओ।" मैंने कहा, "भाई साहब, आप दुष्ट हैं या शराबी

हैं या जुआरी—इससे मुझे क्या मतलब? एक बात का जवाब दीजिये। आपके कोई माँ, बहन हैं या नहीं? एक संत का संदेश लेकर दरवाजे पर पहुँची हूँ। इस तरह लौटनेवाली यह बहन नहीं है। भूमि-दान-यज्ञ आन्दोलन के विचार की राखी यह बहन अपने भाई की कलाई में बाँधकर लौटेगी, पहले नहीं।"

दुनिया ने उन्हें दुष्ट कहा था, दुर्जन कहा था, शैतान कहा था। लेकिन उनकी आँखों में आँसू छलक पड़े। वे आँसू क्या थे, उनकी सोयी हुई भलाई जाग उठी। हाथ जोड़कर बोले, "बहन, अंदर पधारिये।" उन्होंने सभा का आयोजन किया, पाँच सौ एकड़ जेरकाश्त जमीन में से सवा सौ एकड़ जमीन दान में दी। गाँववालों ने भी दी। चार घंटे के भीतर २१५ एकड़ जमीन का दान लेकर मैं उस गाँव से लौटी।"

पहुँचाने आये—पर भेंट चढ़ाकर लौटे : ६० :

गया जिले की बात है। दिनभर में दो-तीन गाँव हो आये थे, रात बिलौटी नामक गाँव में पड़ाव डालना था। पिताजी और माताजी तथा साथ के कार्यकर्तागण पैदल निकले, हम पाँच भाई-बहन और श्री दिवाकरजी मोटर से

जा रहे थे। रात का समय था, रास्ता ठीक से पूछ लिया था, फिर भी भटक गये।

पहाड़ी इलाका था, रास्ता खोजते-खोजते हम नदी के पास पहुँच गये—आसपास देखने पर एक छोटी-सी रोशनी दिखाई पड़ी। दिवाकर भाई और ड्राइवर साहब वहाँ गये। वहाँ एक छोटी-सी झोपड़ी थी। एक नौजवान भाई से पूछा, तो उन्होंने झट से कह दिया कि "भाई, रास्ता-वास्ता दिखाने के लिए मुझे अभी फुरसत नहीं है।" अंदर वृद्ध पिताजी बैठे थे। आवाज सुनकर बाहर आये। जब उन्होंने सुना कि रास्ता भटक गये हैं, साथ में छोटे बच्चे भी हैं, तो बूढ़े बाबा ने तुरत कहा, "चलो-चलो, मैं रास्ता दिखाता हूँ। बच्चे तो भगवान् हैं।" और वे दौड़े-दौड़े मोटर के पास आये। साथ में ४-५ गन्ने भी लेते आये थे। बच्चों के प्रति कितना स्नेह! उन्होंने हमें ठीक से अपने मुकाम पर पहुँचा दिया।

हमने माँ से और पिताजी से उन्हें मिलाया। पिताजी ने अपने पास बिठाते हुए उनसे पूछा कि किस बस्ती में रहते हैं, क्या करते हैं, और धन्यवाद दिया कि बच्चों को पहुँचा दिया।

बूढ़े ने सरलता से कहा, "उसमें क्या हुआ, ये लोग रास्ता भूल गये थे, मैंने पहुँचा दिया।" फिर पिताजी ने

पूछा, "पता है, ये लोग क्यों घूमते हैं ?" हाथ जोड़कर कहने लगे, "हम क्या जानें ?" फिर उन्हें पिताजी ने बाबा का संदेश सुनाया। लोग कहने लगे कि उनके पास नहीं के बराबर जमीन है। आप क्यों अपना समय बेकार बर्बाद करते हैं ? पिता जी ने कहा, "उन्होंने इतना कष्ट किया। हमारे विचार उन्हें मालूम होने चाहिए। वे हमारे कार्य-कर्ता बन गये हैं।"

सारी बात सुनकर उस बूढ़े बाबा ने हाथ जोड़कर कहा, "दस कट्ठा मेरे पास है। एक धुर लिख लीजिये। जमीन भी नदी किनारे की है। भारी समझी जाती है।"

हम लोगों का हृदय यह त्याग देखकर भर आया। हमें पहुँचाने आये और यह भेंट भी चढ़ाकर जा रहे हैं। जमीन कितनी दी, इसका महत्त्व नहीं, भावना का महत्त्व है।

मरने से नहीं डरता : ६१ :

गया जिले की बात है। हम लोग बाराचेट्टी थाने में सपरिवार यात्रा कर रहे थे। पड़ाव लहथुआ में था। नारायणजी नामक एक कार्यकर्ता को गया से भेजा था। नारायणजी लहथुआ के लिए गया से रवाना हुए। उनके साथ भू-दान-साहित्य, डाक और जरूरी सामान था। मोटर से उतरकर लहथुआ गाँव पहुँचना था। करीब दो मील

का रास्ता पैदल तय करना था। रास्ता जंगल से होकर था। रात के करीब आठ बजे का समय था। थोड़ी दूर जाने पर दो आदमियों ने उनका पीछा किया और मुक्कों से उन्हें मार गिराया। गरदन के दोनों बाजू लाठी रखकर दबाने को तत्पर ही थे कि इतने में एक तीसरा आदमी झाड़ियों में से बाहर निकला। उसको कुछ पूछ-ताछ करने की प्रेरणा परमेश्वर ने दी। नारायणजी ने कहा, "मैं विनोबाजी का कार्यकर्ता हूँ। उनके मंत्री के पास डाक और साहित्य लेकर जा रहा हूँ। मृत्यु से मैं घबराता नहीं। आप मेरी जान लेना चाहते हैं, तो ले सकते हैं। पर इससे गरीबों का और आपका ही नुकसान होगा।"

वाल्मीकि की कथा नारायण भाई ने उन्हें सुनायी। और आश्चर्य क्या कि वह वहाँ चरितार्थ भी हो गयी। उन लोगों ने आगे से ऐसा निकृष्ट कार्य न करने का संकल्प किया और नारायणजी को लहथुआ के नजदीक तक पहुँचाकर वे क्षमा माँगकर लौट गये।

घर भूदान में : ६२ :

छोटे-छोटे दानों के समाचार अक्सर आते हैं। परिमाण में ये दान छोटे अवश्य होते हैं, पर परिणाम में महान् होते हैं, सुदामा के तंदुल और शबरी के बेर की तरह।

गया जिले के घोषी थाने में गरीबों में दान देने के लिए होड़-सी लग गयी थी। छोटे-छोटे किसान जी खोलकर दान करते थे। पुराने जन-सेवक श्री रामभजन दत्त एक रोज पैदल-यात्रा से लौट रहे थे। घोषी थाने के सुकियामा ग्राम का एक गरीब माली दौड़कर उनके पास आया और बड़ी आरजू से कहने लगा, "जमीनवाले जमीन दे रहे हैं। मेरे पास तो सिवा घर के और कुछ नहीं है। मैं उसीको भू-दान में देना चाहता हूँ। कृपा कर इसे स्वीकार कर लीजिये।"

पति से पत्नी ने अधिक दिया　: ६३ :

बहनों ने भी भू-दान में काफी हिस्सा लिया है। मकियाहूँ गाँव में विनोबा के पहुँचने पर एक मुसलमान भाई ने ११ एकड़ जमीन का दान-पत्र अर्पण किया और कहा, "मेरी पत्नी बीमार है, आप वहाँ आयेंगे?" उस बहन के बदले उसकी छोटी-सी लड़की ने आकर ११॥ एकड़ जमीन का दान दिया। विनोबा तो घर के दरवाजे में ही खड़े थे। उनको मालूम हुआ कि वह बहन सख्त बीमार है। इसलिए वे स्वयं ऊपर जाकर उससे मिल आये। विनोबा ने उस भाई से कहा,—"तुम्हारी अपेक्षा तुम्हारी पत्नी ने अधिक जमीन दी। यह ठीक ही हुआ।"

८० वर्ष का एक बूढ़ा लकड़ी के सहारे चलकर बाबा राघवदासजी के पास पहुँचा। बोला, "भूमिवाला बाबा कहाँ है?"

"क्यों? पास के गाँव में ही उनका पड़ाव है।"

"मुझे उनका दर्शन करने चलना है।"

"जरूर करना, जमीन-वमीन कुछ दोगे?"

"मेरा तो क्या बूता है, पर अपनी शक्ति और बाबाजी की इच्छा के अनुसार कुछ तो दूँगा ही।"

विनोबा ने इनके साथ हिसाब किया।

"आपके पास कितनी जमीन है?"

"दो एकड़।"

"घर में खानेवाले कितने हैं?"

"छोटे-मोटे सब मिलाकर कोई पचास होंगे।"

लोगों के मन में प्रश्न उठा कि इसके पास से भला क्या लेना है। इसको तो उल्टे देना ही चाहिए। विनोबा जमीन का वितरण शुरू करेंगे, तब जरूर ऐसे लोगों को जमीन देंगे।

पर अभी तो वे गरीबों की सेना खड़ी कर रहे हैं। उसमें गरीब सैनिक को भरती न करें?

वे बोले, "आपकी जमीन का इक्यावनवाँ हिस्सा मैं लूँगा।"

बेटी को खाली हाथ लौटाओगे ? : ६५ :

सियाडीह गाँव के नजदीक ही एक छोटा-सा देहात था। साथियों ने कहा कि "बहन, इस गाँव में ठहरने से कुछ फायदा नहीं, कुछ खास मिलेगा नहीं।" मैंने कहा, "विचार समझाना हमारा धर्म है।" थोड़ी ही देर में लोग जमा हो गये। थोड़े में उन्हें अपना विचार समझाया। एक भाई ने अपना सातवाँ हिस्सा दान किया। सामने बैठे एक भाई से मैंने पूछा, "कहिये, आपकी ओर से कितनी लिखूँ ?" कहने लगे, "एक बीघा लिख लो।" मैंने सहज पूछा, "आपकी कुल जमीन है कितनी ?" "२४ बीघा।" मैंने कहा, "केवल १ बीघा बहुत कम है।" "अच्छा, १॥ लिख लीजिये।" मैंने कहा, "विनोबाजी का आदेश है, छठा हिस्सा लेना चाहिए।" बोले, "नहीं, मेरे लिए इतनी बहुत ज्यादह हो गयी, अब मैं एक धुर भी नहीं दे सकता।" मैंने कहा, "बाबाजी, आपकी बेटी बनकर आयी हूँ। क्या बेटी को खाली हाथ बिदा करेंगे ?" "अच्छा, लिख लो ४ बीघा।" मैंने मन ही मन प्रणाम किया और बाबा का वाक्य याद आया—"श्रद्धा से माँगने जाओगे, तो जरूर मिलेगा।"

बाद में सभी को आश्चर्य हुआ कि उन भाई ने छठा हिस्सा कैसे दे दिया, क्योंकि अपने इलाके में कंजूसी के लिए वे प्रसिद्ध थे!

मैं इस गाँव में नहीं रहूँगा : ६६ :

गुरुवा थाने का आखिरी पड़ाव था। सबने अपना-अपना हिस्सा दिया। प्रजा-समाजवादी कार्यकर्ता श्रीअम्बिका बाबू के पिताजी ने देने से इनकार कर दिया। अंत में सभा के बाद आगामी योजना बनी। अम्बिका बाबू ने कहा, "अब मैं इस गाँव में नहीं रहूँगा। मेरे पिताजी ने अपना हिस्सा नहीं दिया है, इसलिए मैं और मेरा बच्चा, हम सब आपके साथ चलते हैं।" अम्बिका बाबू के भाई वहाँ बैठे यह सब सुन रहे थे। उठकर उन्होंने कहा कि "नहीं, ऐसा नहीं होगा। हम भी छठा हिस्सा देंगे।"

मैं सोच-समझकर दे रहा हूँ : ६७ :

गया जिले के मखदुमपुर थाने की बात है। मखदुमपुर से दो मील दूरी पर एक सभा हो रही थी। सभा के बाद भू-दान की घोषणा शुरू हुई। रामकृष्ण नामक एक किसान ने कहा, "मेरी सारी जमीन लिख लीजिये।"

"कितनी है आपकी जमीन?"

"तीन एकड़ ।"

"फिर आप क्या करेंगे ?"

"मजदूरी ।"

"घर में कौन-कौन हैं ?"

"पत्नी और बच्चा ।"

"आप आध एकड़ दीजिये और ढाई एकड़ अपने लिए रख लीजिये ।"

"जी नहीं, मैं तो अच्छी तरह मजदूरी कर सकता हूँ । मैंने तय किया है, मैं सोच-समझकर सारी जमीन दे रहा हूँ ।"

बहुत समझाने पर भी वह नहीं माना । लोगों ने कहा, "ये तीन भाई हैं । छह बरस से कोर्ट में झगड़ा चल रहा था । अभी फैसला हुआ है । इसकी जमीन के दस हजार रुपये लग चुके हैं ।" जब बार-बार समझाने पर भी नहीं माना, तो बापूजी और विनोबाजी की जयजयकार के बीच वह दान स्वीकार कर लिया गया ।

सद्भावना का साक्षात्कार : ६८ :

हमारी यात्रा बाराचेट्टी थाने में हो रही थी । पड़ोस में ही फतहपुर थाने की सीमा थी । चार मील पर छपरा जिले के एक बड़े भूमिवान् ववन बाबू की खुदकाश्त खेती थी ।

बबन बाबू अक्सर इधर रहते नहीं हैं, पर आज खबर मिली कि आये हुए हैं। उदार हैं। पहले एक हजार एकड़ दे चुके हैं, पर और भी दे सकते हैं। देने की गुंजाइश है। हमें जाना था सीधे सात मील। अगर बबन बाबू से मिलकर जाते हैं, तो छह मील का और चक्कर पड़ता है। मेरी छोटी बहन माला और छोटा भाई आनन्द, दोनों बीमार हो गये थे। वाहन का कोई प्रबंध नहीं हो सकता था। सबने सोचा कि दरिद्रनारायण की झोली लेकर निकले हैं, बबन बाबू से मिलकर ही जाना चाहिए। बच्चों का भी उत्साह देखा, तो सबने "रमारमण गोविन्द हरि" का स्मरण करके फतहपुर की दिशा में कूच कर दिया।

हमारे साथियों ने कुछ ही समय पहले जाकर हमारी खबर उनके पास पहुँचा दी थी। बबन बाबू ने बहुत प्रेमपूर्वक स्वागत किया, फिर उन्होंने बातचीत शुरू की—

"मैं आज आप लोगों से बहुत नाराज हूँ!"

"ऐसा कोई अपराध तो हमसे हुआ स्मरण नहीं आ रहा है।" उनका भाव समझकर पिताजी ने मुसकराकर जवाब दिया।

"बीमार बच्चों को लेकर यहाँ तक आने का कष्ट आपने क्यों किया? मुझे बुला लेते। सिर्फ संदेशा देते, तो मैं उपस्थित हो जाता।"

"बहुत-बहुत क्षमा माँगते हैं आपसे" कहकर हम लोगों ने मन-ही-मन उनकी सद्भावना की सराहना की।

स्नान-भोजन आदि के बिना वहाँ से निकलना संभव नहीं दिखाई दिया। भोजन की तैयारी हुई। अब बैठना होगा भोजन को। अनुकूल समय देखकर पिताजी ने दक्षिणा की बात छेड़ी।

"आपने तो पहले ही एक हजार एकड़ भूमि दी है। इसके लिए हम आपके बहुत आभारी हैं। फिर भी हमारी माँग तो रहेगी ही। आपकी भूमि का हम लोगों को कोई अन्दाज नहीं है। परन्तु कुछ मित्रों ने बताया कि अभी और थोड़ी गुंजाइश है, आपके पास देने की। अब आप ही सोचिये। भूमि की समस्या बिना षष्ठांश के हल नहीं होगी। बड़े भूमिवानों को तो अधिक-से-अधिक देना होगा। तो हम चाहते हैं कि फिलहाल आप षष्ठांश पूरा कर दें। फिर अधिक आप जितना भी चाहें। इससे अन्य भूमिवानों से माँगने में भी बड़ी सहायता होगी।"

बबन बाबू ने अपना हिसाब देखा। कागजात पूरे पास थे नहीं, फिर भी उन्होंने बताया कि मैं अन्दाज से उतना अंक लिख देता हूँ कि षष्ठांश से कम न हो। उन्होंने पाँच सौ एकड़ का नया दान-पत्र भर दिया। कुल पंद्रह सौ एकड़ हुई। वे कितने एकड़ का दान-पत्र भरते हैं, इसीकी

ओर सब टकटकी लगाये बैठे थे। माला और भारती का बुखार तो न जाने कब का हवा हो चुका था। बबन बाबू ने आनन्द के हाथ से दान-पत्र लिखाया। उनके साथ सबको बड़ी आत्मीयता का अनुभव हुआ। बच्चों के लिए सवारियों का भी प्रबन्ध उन्होंने करा दिया।

चलते समय पिताजी ने एक और माँग की, "षष्ठांश आपने दिया, वह तो बहुत अच्छा हुआ। परन्तु विनोबाजी का समाधान इतने से नहीं होता। आप अपने बड़े भूमि-वान् मित्रों से भी भूमि दिलवाइयेगा। आप लोग ही तो विनोबा का काम करनेवाले हैं।"

कुछ सोचकर बबन बाबू ने कहा, "अभी फरवरी है। आप अप्रैल, मई में अपने कार्यकर्ता को भेजिये। मैं इधर आसपास के पचीस-तीस गाँवों में, जहाँ मेरा संबंध है, भूदान का काम करने को तैयार हूँ। प्रायः सभी देंगे।"

उस दिन के सत्संग को याद करते हैं, तो आज भी हम सब गद्गद हुए बिना नहीं रहते।

जीवनदान : ६६ :

यों तो चांडिल-सम्मेलन के पहले से ही जयप्रकाशजी अपनी पूरी शक्ति से भूदान-यज्ञ में कूद पड़े थे, परन्तु भीतर मंथन चलता ही था।

अपने अनुभव से उन्होंने देखा कि जब तक जीवन-समर्पण करनेवाले हजारों कार्यकर्ता आगे नहीं आयेंगे, भूदान-यज्ञ का कार्य ठीक तरह आगे नहीं बढ़ पायेगा। इसलिए बोधगया-सम्मेलन में उन्होंने अपने जीवन-दान की घोषणा कर दी तथा सबका आवाहन भी किया।

प्रातः प्रार्थना के बाद तुरन्त ही दूसरे रोज जयप्रकाशजी के हाथ में जीवन-दान का एक समर्पण-पत्र पहुँचा,

"श्री ज० प्र०,

आपके आवाहन पर भूदान-यज्ञ-मूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रान्ति के लिए मेरा जीवन-समर्पण।

२०-४-'५४ विनोबा के प्रणाम"

पत्र के मजमून ने धीर-गंभीर जयप्रकाशजी को हिला दिया। उनका विनम्र व्यक्तित्व इस गुरुतर भार को सहन करने में सकुचाने लगा। जैसे-जैसे उनका संकोच बढ़ने लगा, हिमालय की ऊँचाई की तरह समर्पण का गौरव बढ़ने लगा। और दो घंटे की अवधि में पाँच सौ से अधिक कार्यकर्ताओं ने, जिनमें सर्व-सेवा-संघ के अध्यक्ष तथा

सम्मेलन की अध्यक्षा से लेकर छोटे-से-छोटे कार्यकर्ता भी शरीक हैं, अपना जीवन अर्पण कर दिया।

मानव-इतिहास में यह प्रसंग अपूर्व ही समझा जायगा।

प्रेम का आक्रमण : ७० :

उस दिन एक सज्जन गया-जिला-भूदान-समिति के दफ्तर में आकर दो सौ एकड़ का दान-पत्र लिखा गये और इतनी नम्रता के साथ और भक्तिभाव से कि जैसे विशेष कुछ किया ही न हो। उन्हें विनोवाजी का पूरा साहित्य सौंपा गया। वह भी वे उत्साहपूर्वक ले गये।

अब तक गया शहर के काम में श्री डा० केशवप्रसाद सिंह विशेष उत्साह से योग देते थे, लेकिन उन्होंने गया से हमेशा के लिए पटना जाकर रहना तय किया। तब गया शहर की जिम्मेदारी किसे सौंपी जाय? श्री भूप बाबू का नाम सुझाया गया। डाक्टर साहब पिताजी को लेकर भूप बाबू से मिलने उनके घर गये। भूप बाबू को देखते ही पिताजी ने कहा, "आपने ही तो उस रोज कार्यालय में जाकर दो सौ एकड़ का दान लिखाया था? अब आपको विनोबा का काम भी करना होगा।"

भूप बाबू चुप रहे। उन्हें बड़ा संकोच हो रहा था।

किन्तु उस रोज से भूप बाबू भूदान में अधिकाधिक दिल-चस्पी लेने लगे।

इस बीच विनोबाजी की गया जिले की दूसरी यात्रा तय हुई। मित्रों ने स्वागताध्यक्ष का बोझ भूप बाबू पर ही डाला। एक ओर भूप बाबू को उत्साह था कि विनोबाजी की सेवा का मौका मिला, दूसरी ओर उनकी चिन्ता बढ़ रही थी कि विनोबा को भेंट देने योग्य पत्रम् पुष्पम् क्या जुटाया जाय? लोगों से दान माँगने में उन्हें संकोच होने लगा। बड़े-बड़े जमींदारों से मिलने जाना था। रातभर भूप बाबू का भक्त-हृदय कुछ बेचैन रहा। प्रातःकाल से वे उत्साहपूर्वक दान माँगने में जुट गये। उनकी वाणी में किसी विशेष संकल्प का बल प्रकट होने लगा। विनोबाजी का स्वागत करने के लिए वे मंच पर खड़े हुए और उन्होंने अपना हृदय विनोबाजी की सेवा में खोलकर रख दिया—

"विनोबाजी, मैं अपनी सारी जमीन, करीब तीन हजार बीघा, आपकी सेवा में अर्पण करता हूँ।"

"करीब" इसलिए कहा कि कागजात तैयार नहीं हो पाये थे। हिसाब तैयार हुआ तो जमीन का अंक दुगुना निकला।

गर्मी के दिन थे। एक दिन भूप बाबू ने पिताजी को बहुत चिंतित देखा।

"आपके मन पर किस बात का बोझ है?" भूप बाबू

ने पूछा। "दफ्तर के लिए ठीक मकान नहीं मिल रहा है। काम बढ़ता जा रहा है। दो-दो जगह दफ्तर है—डाक बँगले में भी और स्टेशन-धर्मशाला में भी। लोगों को आने-जाने में भी काफी दिक्कत होती है।"

"अभी आज ही दफ्तर अपने घर ले चलिये। वहाँ हम लोग भी कुछ अधिक समय दे सकेंगे। आश्रम का वातावरण रहेगा। बच्चों को भी संस्कार मिलेंगे।" किन्तु भूप बाबू को असुविधा न हो, इस खयाल से उस समय स्थान-परिवर्तन नहीं किया गया।

परंतु बोधगया-सम्मेलन के बाद गया में सर्व-सेवा-संघ का कार्यालय रखना तय हुआ।

इस बार भूप बाबू नहीं माने। उनकी ओर से मानो प्रेम का आक्रमण ही हुआ। उन्होंने श्री वल्लभस्वामी को राजी कर लिया। स्वामी ने भी भक्त-हृदय का आतिथ्य स्वीकारना ही उचित समझा। और सर्व-सेवा-संघ-कार्यालय तब से भूप बाबू के निवास-स्थान में ही आ गया।

आज वह निवास भूदान-कार्य का एक महत्त्वपूर्ण अखिल भारतीय केन्द्र बन गया है।

चमत्कार : ७१ :

बाराचेट्टी जिले में श्री दिवाकर भाई पदयात्रा कर रहे थे। सड़क से बहुत दूर, जंगल में मनफर नाम की तीस

घरों की एक छोटी-सी वस्ती में पहुँचे। गाँववालों के पास करीव १२५ एकड़ जमीन थी। गया के एक जमींदार थे। उनकी जोत में भी करीव उतनी ही जमीन इस गाँव में थी, जिसे वे गाँववालों से ही जुतवाते थे।

दिवाकरजी ने उनको भू-दान की वात समझायी। उससे होनेवाले लाभ भी समझाये। ग्रामदान की वात तव तक विशेष रूप से शुरू नहीं हुई थी। लेकिन दिवाकरजी मँगरौठ के ग्रामदान के साक्षी थे। उन्होंने सहज भाव से सुझाया, "आप लोग चाहें तो ग्रामदान भी दे सकते हैं। सारी जमीन सारे गाँव की कर लीजिये।"

"हमें तो यह अधिक अच्छा लगता है। हमारा छोटा-सा गाँव है। एक परिवार की तरह रहेंगे"—गाँव के मुखिया ने कहा।

"यही तो विनोवाजी चाहते हैं"—दिवाकर जी ने पुष्टि की।

सर्वे किया गया। भूमिवानों और भूमिहीनों की सूचियाँ वनीं। जिसके पास २४ एकड़ थी, उसके हिस्से में पाँच एकड़ आयी। जिसके पास कुछ नहीं था, उसे भी अपने परिवार के दस लोगों के लिए दस एकड़ मिली। सारा गाँव परिवार वन गया। सामूहिक खेती के लिए भी कुछ जमीन वच गयी।

जमींदार से भी ग्रामदान में शामिल होने की प्रार्थना की गयी—"अगर आप गाँव में अपना एक निवास बनाकर रहें, तो आप भी अपना हिस्सा पा सकते हैं।"

जमींदार ने कहा, "हमारे लिए उस गाँव में आकर रहना तो संभव नहीं। लेकिन अब तक वे ही लोग इस जमीन को जोतते आये हैं। आगे भी वे ही जोतें"—और सवा सौ एकड़ का दान-पत्र लिख दिया। यह जमीन भी गाँववालों में तकसीम कर दी गयी।

प्रमाण-पत्र वितरण-समारोह मालमंत्री द्वारा हुआ था। उन्होंने कहा,—"मैं तो समझता था कि भूदान के जरिये विनोबाजी गरीबों को थोड़ी-थोड़ी जमीन दिलाते हैं। परन्तु यहाँ मैं जो कुछ देख रहा हूँ, वह तो एक चमत्कार है"

आठवाँ हिस्सा : ७२ :

उस दिन किशनगंज में विनोबाजी का पड़ाव था। एक मुसलमान जमींदार अपनी जमीन का दान-पत्र लेकर आये। परती जमीन करीब ३,००० एकड़ उन्होंने सारी-की-सारी लिख दी। जोत की जमीन का अंक नहीं भर पाये थे। असमंजस में थे कि कितना लिखें। विनोबाजी ने पूछा, "कितने भाई हैं आप?"

"पाँच ।"

"तब तो मैं छठे हिस्से का हकदार हो ही गया ।"

जमीदार महाशय मौन रहे ।

"आप कुछ असमंजस में हैं ?"—विनोबाजी ने पूछा ।

"जी, आपकी बात तो ठीक है", जमींदार महाशय ने कहा, "लेकिन इसलाम में बहनों को भी हक रहता है ।"

"आपके कितनी बहनें हैं ?"

"दो ।"

"पाँच भाई, दो बहनें—सात हुए ।"

"जी ।"

"तो फिर आठवाँ हिस्सा दरिद्रनारायण का ।"

जमींदार महोदय प्रसन्न हुए और जोत की जमीन का आठवाँ हिस्सा भू-दान में लिख दिया ।

इतना संतोष और किसी काम से नहीं : ७३ :

"आप जमीन माँगने आये हैं और आप आये हैं, तो कुछ देना भी चाहिए । लेकिन मेरा आपके इस भू-दान-आन्दोलन में विश्वास नहीं है ।"

"काहे ?"

"पिछली बार जब विनोबाजी का आगमन हुआ था, हमारे नेतागण हमसे जमीन माँगने आये । उन्हें मालूम था

कि मेरे पास अपनी जोत की जमीन के अलावा पड़ती जमीन भी है। वे दान में बड़े अंक दिखाना चाहते थे। उन्होंने मुझसे कहा, "अजी, आपके पास जो पाँच सौ एकड़ जमीन पड़ती पड़ी है, वही हमें दे दीजिये।" और हम दोनों भाइयों से पाँच-पाँच सौ एकड़ के दान-पत्र भरवाकर ले गये।"

विनोबाजी पड़ती जमीन स्वीकारते नहीं, ऐसा नहीं। वे पड़ती जमीन भी स्वीकारते हैं; और कहते भी हैं कि पड़ती जितनी है, वह तो सब दे ही देनी चाहिए। लेकिन आपके पास जोत की जो जमीन है, उसका भी कम-से-कम छठा हिस्सा तो दें हो जोत की जमीन के साथ ही वे पड़ती स्वीकारते हैं।

"लेकिन माँगनेवालों को तो मालूम था कि मेरे पास जोत की जमीन भी है। उन्होंने माँगी नहीं, इतना ही नहीं, माँगने की इच्छा भी प्रकट नहीं की। तब मैं समझ गया कि यह आन्दोलन केवल दिखावे का आन्दोलन है। लोग किस तरह से अपना नेतृत्व टिकाने के लिए बड़े-बड़े अंक दान-पत्रों में भरवा लेते हैं और संत को धोखा देते हैं।"

"खैर, अब आप तो जान गये न कि विनोबाजी का कहना ऐसा नहीं है। अब तो आप जोत की जमीन का छठा हिस्सा दीजियेगा न विनोबाजी को?"

कुछ देर सोचकर उन्होंने कहा, "ठीक है, आपको एक गाँव में चाहिए या अलग-अलग गाँवों में ?"

"जमीन का मसला तो हर गाँव में है, क्योंकि बेजमीन हर गाँव में हैं। इसलिए जितने गाँवों में आपकी जमीन है, उतने गाँवों में मिलनी चाहिए।"

"मैं आपकी बात समझ गया। इसी तरह से समस्या हल हो सकती है।"

अंबिका बाबू ने नक्शे निकलवाये, हर गाँव की अपनी जमीन की आराजी का लेखा तैयार कर दिया और हर जगह का छठा हिस्सा जोड़कर कुल ६० एकड़ का दान-पत्र अपना, और उतने ही एकड़ का अपने भाई का भर दिया।

"अब तो आपको सन्तोष हुआ ?"

"जी नहीं।"

अंबिका बाबू कुछ विस्मित-से दिखाई दिये।

"तब आपका सन्तोष होने के लिए और क्या करना होगा ?"

"विनोबाजी को केवल भू-दान से सन्तोष नहीं। वे आपका समय-दान भी चाहते हैं। वे दाता को ही इस क्रांति का वाहक बनाना चाहते हैं। जितने गाँवों में आपकी जमीन है, उन गाँवों में तो आपको ही विनोबाजी की तरफ

से जाकर बेजमीनों के लिए आवश्यक जमीन प्राप्त करनी होगी।"

"इतना तो हो सकता है।"

"एक बात और है।"

"कहिये।"

"सम्मेलन तक आपको सारा समय इसी काम में देना होगा।"

"सम्मेलन में अभी कितनी देर है?"

"चार माह।"

"मैं शाम तक आपको सोचकर उत्तर दूँगा।"

उस दिन होली का त्यौहार था। हम सबने अंबिका बाबू के घर पर ही भोजन किया। शाम को हम लोगों की विदाई थी। अंबिका बाबू ने अपने लड़के को बुलाकर कहा,

"अच्छा, अब आज मैं भी भू-दान के लिए जा रहा हूँ। अब घर का कारोबार सम्मेलन के बाद देख सकूँगा। तब तक जैसा सँभाल सको, सँभालना।"

और तब से सम्मेलन तक वे बराबर भू-दान के काम में जुटे रहे और भूमिहीनों के लिए करीब आठ हजार एकड़ जमीन प्राप्त की।

सम्मेलन में जब अंबिका बाबू से भेंट हुई, तो उन्होंने कहा,

"मैंने अब तक अपने जीवन में बहुत काम किये, लेकिन जितना संतोष मुझे इस काम से हुआ है, उतना आज तक और किसी भी काम से नहीं हुआ।"

रूठे जामाता : ७४ :

उस दिन पू० बाबा का पड़ाव जानीबीघा मठ में था।

महन्तजी की ओर से सौ एकड़ जमीन का दान-पत्र पहले ही मिल चुका था। लेकिन वह ज़मीन दूसरे गाँव में थी।

जानीबीघा में भूमिहीनों की संख्या उनचालीस थी। उन सबके लिए उन लोगों को पूछकर आवश्यक जमीन का दान-पत्र विनोबाजी की उपस्थिति के उपलक्ष्य में भर दिया गया।

कुछ दिनों बाद वितरण की तारीख तय पायी।

अब कल विधिवत् वितरण के बाद प्रमाण-पत्र दिये जायँगे।

आज रात को भूमिहीनों ने जमीन लेने से इनकार कर दिया।

"हमें तरी जमीन चाहिए। जो जमीन दान में मिली है, वह तरी नहीं है, खुश्की है।" भूमिहीनों ने साफ कह दिया।

"हमें यहाँ कोई तकलीफ नहीं है। हमारी बेटियाँ भी

शादी के बाद ससुरालवाला अपना घर छोड़कर अपने पति के साथ यहाँ आकर बस जाती हैं, क्योंकि मठ की ओर से सब को पर्याप्त काम और पर्याप्त वेतन दिया जाता है। दूसरी जगह यह सुख-सुविधा नहीं है। अगर हमें जमीन देनी हो, तो तरी की दीजिये। और वह भी कहीं दूर की नहीं, हमारे अपने घरों के सामनेवाली, जिसे हमने अपने हाथों मठ के लिए तैयार किया है। घर से जरा-सी दूरी पर भी हमें जमीन नहीं चाहिए। हमारा जमीन के लिए वास्तव में कोई आग्रह नहीं है, क्योंकि हमें कोई तकलीफ नहीं है।"

सब असमंजस में पड़ गये कि इन लोगों को कैसे समझाया जाय।

भू-दान-समिति की ओर से उन लोगों को आश्वासन दिया गया कि दान में मिली जमीन में कुँआ खुदवाया जायगा। और सुविधाएँ भी दी जायेंगी।

परन्तु उन्होंने स्वीकार नहीं किया।

मानो जामाता शादी में रूठे बैठे हों।

मठ के व्यवस्थापक स्वामी रामानंद भारती, जो अब तक खामोश बैठे सारा दृश्य कुतूहलपूर्वक देख रहे थे, बोले,

"यह सही है कि तरीवाली जमीन सारी इन्हीं लोगों ने तैयार की है। अगर इनको वही जमीन चाहिए और

वह भी उनके घरों के सामनेवाली, तो वैसा ही किया जायगा।"

और स्वामीजी ने स्वयं पूछा कि "बोलो, तुम लोगों को फी आदमी कितनी चाहिए।" खुश्कीवाली जमीन परिवार के हिसाब से एकड़, दो एकड़, चार एकड़ तक मिली ही थी। इसलिए उन लोगों ने तरी केवल दस कट्ठा फी आदमी के हिसाब से पर्याप्त समझी। उनके इच्छानुसार उन्होंने जहाँ चाहा—जमीन दी गयी।

गाँव में उस वर्ष इन लोगों की फसलें सर्वश्रेष्ठ आयीं, कटनी हुई। खलिहान में गाड़ियाँ लदीं।

लेकिन घरों में जाने के पहले वे गाड़ियाँ मठ में पहुँचीं।

हुक्म की इन्तजारी में भूमि-पुत्र रुके रहे।

स्वामी रामानन्दजी ने पूछा, "गाड़ियाँ यहाँ क्यों लायी गयीं?"

"हुजूर, मठ का हिस्सा पहले वसूल कर लिया जाय, फिर गाड़ियाँ घर में जायँगी।"

"मठ का हिस्सा कैसा?"

"तो क्या सारी पैदावार पर हमारा ही हक है?"

"तो अब मठ का क्या हक रहा?"

"औरों से जैसा अब तक लिया गया, सोचा हमें भी देना चाहिए।"

स्वामीजी के ध्यान में बात आते देर नहीं लगी। उनका हृदय भर आया। उन्होंने समझाया, "अरे भाई, औरों को अब तक जमीनें बटाई पर दी जाती थीं। तुम लोगों को यह जमीनें विनोबाजी की ओर से मिली हैं, और अब ये तुम्हारी अपनी हो गयी हैं। अब मठ का उस पर कोई हक नहीं है। जाओ। खुश रहो। धरती माता की ठीक सेवा किया करो।"—बोलते-बोलते स्वामीजी का कंठ भर आया।

भूमिपुत्रों ने सचमुच पुत्रवत् अपने पिता को प्रणाम किया।

जो लोग कहते हैं कि भू-दान में जमीन के टुकड़े होते हैं, वे जरा आकर देखें कि गाँव-गाँव में दिल के टुकड़े कैसे जोड़े जा रहे हैं भूदान की इस अद्भुत प्रक्रिया से।

हम चोरी नहीं करेंगे : ७५ :

"अब तक हम आपकी फसल में से चोरी करके अपना काम निबाह लेते थे। लेकिन अब हमको विनोबाजी की ओर से जमीन मिली है। हम चोरी नहीं करेंगे। हमें आपसे पूरी मजदूरी मिलनी चाहिए।"—सेखवारा के भूमि-पुत्रों ने अपने मालिक से निवेदन किया।

लेकिन पूरी मजदूरी के लिए मालिक लोग तैयार नहीं थे।

और चोरी करने के लिए भूमि-पुत्र तैयार नहीं थे।

करीब एक माह काम बंद रहा। भूमि-पुत्रों में भेद निर्माण करने का, उन्हें फोड़ने का सारा प्रयत्न किया गया। इर्द-गिर्द के देहातों से मजदूरों को लाने की कोशिश की।

लेकिन किसी बात में सफलता नहीं मिली।

भूमि-पुत्रों के सच्चे सेवक श्री दिवाकरजी से मालिकों ने पूछा,

"आखिर ये लोग चाहते क्या हैं?"

"पेटभर मजदूरी। आप देखते हैं कि जब से उन्हें जमीन मिली है, वे आपका काम भी कितना ईमान से और कितना अच्छा करते हैं। आपके लिए तो पुत्र के समान हैं। मेरी विनय है कि उनकी माँग स्वीकार कर ली जाय।"

"ठीक है। चलिये—हम ही आपके साथ चलते हैं और उन्हें समझा देते हैं।"

और दूसरे रोज से भूमि-पुत्र काम पर जाने लगे।

सत्य संकल्प : ७६ :

उन दिनों दिल्ली में गांधी-जयंती का आयोजन चल रहा था। माता जानकीदेवी बजाज के मन में कूप-दान का चिंतन चलता था। इसके पहले वे गया, रांची तथा कलकत्ते में अनेक कूप-दान प्राप्त कर चुकी थीं। चांडिल-सम्मेलन से उन्हें यही धुन जो सवार थी।

दिल्ली के मित्रों से माताजी ने बात की। सबने निरपवाद राय दी कि दिल्ली में कूप-दान आदि कुछ भी मिलने को नहीं है।

लेकिन जहाँ लोगों को नहीं दीखता है, वहाँ सेवक का उत्साह बढ़ जाता है। सामने ग्यारह सितंबर याने विनोबाजी का जन्म-दिन भी आ रहा था। ११ सितंबर से २ अक्तूबर करीब २१ दिन होते हैं। इस पुण्य पर्व में जो कुछ बन सके कर लिया जाय, ऐसी प्रेरणा माताजी को हुई, और उसके लिए प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल जी नेहरू का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहा। शुक्रवार, ग्यारह तारीख, ग्यारह बजे मुलाकात हुई। माताजी ने कूप-दान के लिए पंडितजी से संदेश माँगा। "केवल संदेश ?" कहकर पंडितजी ने एक कूप-दान भी लिख दिया।

शाम की प्रार्थना सभा में राष्ट्रपति का धीर गंभीर भाषण हुआ। और कोई बोलनेवाला था नहीं। माताजी ने बहुत संकोच के साथ खुद बोलने की इजाजत चाही, तो राष्ट्रपति ने उनका उत्साह बढ़ाया। माताजी ने पंडितजी द्वारा प्राप्त कूप-दान की घोषणा की तथा उनका संदेश पढ़कर सुनाया और फिर राष्ट्रपति की ओर आमुख होकर कूप-दान के बारे में उनका भी आशीर्वाद चाहा और उनके छपरा जिले के लिए एक कुएँ की माँग की।

अपनी परम्परा के अनुसार राष्ट्रपति ने संकेत किया, "एक कुआँ तो आपका 'बोला' हुआ छपरा जिले में और एक 'अबोला' विनोबाजी चाहे जहाँ।"

इस तरह राष्ट्रपति द्वारा दो कुओं का दान घोषित हो गया। और अब दिल्ली में भी कूप-दान की घोषणा होने लगी।

एक सिख भाई अपने साथ पाँच हजार रुपये ले आये थे। वे कूप-दान के लिए दे गये। बिहार में साधारण तौर पर पाँच सौ रुपये में एक कुआँ श्रम-दान के साथ बन जाता है। अर्थात् दस कुएँ और हुए। सामने ही गुजरात के श्री चंदूलाल भाई बैठे थे। माताजी ने विनोद किया कि "दिल्ली के गुजराती मित्रों ने अब तक कूप-दान में हाथ नहीं बँटाया है।" चंदूलाल भाई ने आठ कुओं की घोषणा की। विद्यालय की लड़कियों का भी उत्साह बढ़ा। उन्होंने कहा कि हम सब मिलकर एक कुएँ का प्रबंध कर देंगी।

२७ कुओं की घोषणा तो उसी क्षण हो गयी। माताजी १०८ की माला जपने लगीं।

एक दिन राजघाट की प्रार्थना के बाद उन्होंने देखा कि कोई समाधि के पास ध्यान लगाये बैठा है। घर के लोगों ने चलने की जल्दी की। लेकिन माताजी रुक गयीं।

सब चले गये, लेकिन वे अकेली रह गयीं। जब उस भाई की ध्यान-समाधि उतरी, तो उन्होंने उनके साथ बातचीत शुरू कर दी और अपने कूप-दान की योजना बतायी। उस भाई ने कहा, ठीक है, दो-चार कुएँ तो मैं भी बना दूँगा। माताजी की लगन देखकर उसने दो-चार की जगह पाँच-सात कह दिये और अंत में कहा, अच्छा, मैं ग्यारह कुएँ खुदवा दूँगा। माताजी ने पटना-डेअरी फार्म के उन प्रोप्राइटर महोदय श्री सुन्दरलालजी का नाम लिख लिया।

इस बीच एक रोज वे बिड़ला मंदिर पहुँच गयीं। वहाँ के महंत गणेशदत्त ने भी आर्य-समाज की तरफ से ११ कुएँ बनाने का वचन दिया। किसी रोज किसी मित्र के यहाँ और किसी रोज किसी दूसरे मित्र के यहाँ, इस तरह रोज वे कहीं न कहीं पहुँच जातीं। माँग की मर्यादा कूप-दान तक सीमित कर ली थी। भले ही दाता की क्षमता लाखों रुपया देने की हो, बात कुएँ की परिभाषा में ही करतीं।

"आपके घर में कितनी स्त्रियाँ हैं?"

"पाँच।"

"पाँच कुएँ लिख दीजिये।" और लिखवाकर ही आगे बढ़तीं।

आज दो अक्तूबर! एक सौ सात कुँए तो हो गये।

अब संकल्प के अनुसार एक कुआँ कम रहा। शाम हो गयी। रात हो गयी। बारह बजने का समय होने लगा। बाहर जोरों की वर्षा शुरू हो गयी। माताजी निराश तो नहीं हुई। लेकिन निराश न होने से भी अब दूसरा दिन शुरू होने के पूर्व १०८वाँ कुआँ कहाँ से मिले? क्या एक कुएँ के लिए संकल्प अधूरा रहेगा? माताजी ने घड़ी की ओर निहारा—

पौने बारह।

ग्यारह पचास।

ग्यारह पचपन।

इतने में किसीने दरवाजा खटखटाया। "कोई दाता तो नहीं आया?" माताजी ने मन-ही-मन सोचा।

श्रीमन्नारायणजी, जो सवेरे से अपने काम से बाहर गये हुए थे, लौट आये थे। उन्होंने आते ही पूछा, "माताजी कहाँ हैं?" और कहा, "लीजिये माताजी, आज आपके कूप-दान में पचीस सौ से तीन हजार तक का एक कुआँ बनवा देने का वचन मिला है।"

टन्-टन्-टन् ऽऽऽ घड़ी ने बारह के टंक दिये। "सत्य संकल्प फलता ही है"—मानो घड़ी घोषणा कर रही थी।

माताजी तो 'एक भरोसे राम के' थीं। प्रयत्न की पराकाष्ठा कर चुकी थीं। इसलिए भगवान् को सहायता

के लिए दौड़ आना ही था। प्रेमलदास ने ठीक ही गाया है :

"हरिने भजतां हजी कोईनी लाज जती नथी जाणी रे।"*

दो के बदले पचास एकड़ : ७७ :

गुजरात का एक पावन प्रसंग है।

एक भाई ने दो बीघा जमीन दी थी। उनका वह भूभाग चार बीघा था। वितरण के समय उन्होंने वह पूरा दे दिया। अधिक देने के कारण जो उत्साह आया, उस उत्साह में वे यों बोल उठे कि "यदि मेरी भूमि हरिजनों को दी जाय, तो इस गाँव में मेरी जितनी जमीन है, सब देने के लिए तैयार हूँ।"

श्री नारायण देसाई ने वितरण स्थगित रखा और दाता को सोचने के लिए एक दिन का समय दिया। दूसरे दिन सवेरे उस जमीन के लिए कुछ ग्राहक भी मिल गये। प्रायः दस हजार रुपये की बोली बोली जाने लगी। ग्राहक खुद भूमिवान् थे, परंतु दाता की जमीन को जोतते थे। इसलिए कानूनन वे जमीन खरीदने के हकदार थे और आग्रह रखते,

---

* अभी तक यह सुना नहीं कि हरि के भक्तों को अपनी आबरू खोने का मौका आया हो।

तो हम कुछ नहीं कर सकते थे। दाता और ग्राहक, दोनों को समझाया गया। दोनों ने स्वीकार कर लिया।

दो बीघे के बदले पचास बीघा जमीन मिली। दूसरे एक भाई ने भी अपनी उस गाँव की बाकी बची हुई छह बीघा जमीन दे दी। पहले दाता की जमीन हरिजनों को दी गयी। बाकी जमीन गाँव के बाकी भूमि-हीनों को दी गयी। जोतनेवालों में जिनके पास कम जमीन थी, उन्हें भी दी गयी। जिन्होंने खरीदने का विचार बिना किसी शर्त के छोड़ दिया था, उन्हें भी दो-दो बीघा जमीन दी और गोचर के लिए भी कुछ जमीन रखी गयी।

प्रेम के प्रभावकारी विद्युत्-कण : ७८ :

उस दिन दो सर्वस्वदानी गाँवों का वितरण बाबा के हाथों हो रहा था। एक-एक भूमि-पुत्र आता और अपने हिस्से की भूमि का प्रमाण-पत्र और प्रसाद ग्रहण करता। हरएक नाम के साथ यह भी बताया जाता कि आदाता के पास पहले जमीन थी या नहीं, थी तो कितनी थी और अब आवश्यकता के अनुसार उसे कितनी मिल रही है।

एक भाई के नाम के साथ सबने सुना :

इनके पास पहले चौबीस एकड़ थी। अब इन्हें साढ़े तीन एकड़ मिल रही है।

मानो, सारी सृष्टि का आशीर्वाद उस समय लोगों की हर्षध्वनि में प्रकट हुआ। "आनंदे हरि बोल" के जयनाद से वातावरण गूँज उठा। लेकिन नामों का सिलसिला तो जारी ही था। "इनके पास पहले कोई भूमि नहीं थी। इन्हें पाँच एकड़ भूमि मिली।" आनंद और सद्भावनाओं का सागर उमड़ पड़ा। उत्कल में प्रायः रोज ऐसा दृश्य प्रकट हो रहा है।

बाबा पूछते हैं,

"ऐसी शक्ति किस कानून में है, जो चौबीस एकड़वाले को साढ़े तीन एकड़ स्वीकार करने के लिए राजी कर सके ?

"सिवा प्रेम के कानून के ऐसा कोई कानून नहीं है, जिसमें यह शक्ति हो।"

बाबा आगे पूछते हैं,

"अगर हाइड्रोजन बम से दुनिया का वातावरण विषाक्त हो सकता है, तो इस प्रेम की विद्युत्-भरी लहरों से दुनिया का वातावरण सद्भावना से ओतप्रोत क्यों नहीं हो सकता ?"

इसी श्रद्धा पर तो बाबा के मुख से '५७ तक सर्वोदय की सार्वभौम संस्थापना की भविष्यवाणी प्रकट हुई है।

फसल तैयार है

उत्कल के कोरापुट जिले की कहानी है।

आज का पड़ाव कुटली नामक छोटे-से गाँव में था। रास्ते पर स्वागत के लिए एक गाँव के लोग कीर्तन करते हुए आये। बाबा ने नायक के कंधे पर हाथ रखकर पूछा, "क्या ग्रामदान नहीं करोगे?"

नायक ने सोचने का समय माँगा।

कुटली पर सभी ग्रामवासी भाई-बहन स्वागत के लिए आये थे।

यहाँ भी बाबा ने 'ग्राम-दान' की बात समझायी।

लोगों से पूछा, "क्यों, विचार पसंद है?"

"जी, परंतु हमारे नायक बीमार हैं।"

"तो उन्हें हमारे प्रणाम कहना और हमारा संदेशा भी जाकर सुनाना कि बाबा ग्राम-दान माँग रहा है।"

दोपहर में कुटली के ग्रामवासी आकर ग्रामदान का निर्णय सुना गये।

थोड़ी देर में उस रास्तेवाले गाँव के लोग भी आये और ग्रामदान का संकल्प सुनाया।

थोड़ी देर में श्री गोपबाबू एक कार्यकर्ता को बाबा के

निवास पर ले आये। ये भाई देहातों में काम करने गये थे। आठ जगह से 'ग्रामदान' ले आये हैं।

"तो आज कुल दस हुए"—बाबा ने कहा।

इतने में गोपबाबू ने दूसरे कार्यकर्ता का जिक्र किया, वह भाई दस ग्रामदान लेकर आये थे। तो कुल बीस हुए!

इतने में मनमोहन चौधरी आये। जिलों से आयी हुई बाबा के नाम की उड़िया डाक पढ़ने लगे। कटक जिले के दो नये 'ग्रामदान' मिले थे।

बालेश्वर में भी बीस नये ग्राम दान में मिले थे। इस पावन कहानी को सुनते हुए करुणामय भगवान् के चमत्कार से सबका हृदय गद्गद हो गया।

इस प्रकार पू० बाबा की यात्रा के दर्मियान करीब छह सौ ग्राम-दान मिले और प्रांत की यात्रा समाप्त करने के बाद भी दो सौ ग्रामदान मिले और मिलते ही जा रहे हैं।

ईसा ने ठीक कहा था—

"फसल तैयार है। कार्यकर्ता चाहिए।"

गंगोत्री की प्रेरक यात्रा : ८० :

प्रथम दिन १८ अप्रैल को विनोबाजी के आवाहन पर सौ एकड़ का दान देने पर अब तक जो-जो पोचमपल्ली

गये, किसीको श्री रामचन्द्र रेड्डी ने खाली हाथ नहीं लौटाया।

श्री जयप्रकाशजी गये, तो उन्हें भी भूदान दिया।

श्री केशवरावजी गये, तो उन्हें भी खाली हाथ नहीं लौटाया।

जो भी उस गंगोत्री के दर्शन को गया, कुछ-न-कुछ भूदान पाता रहा है।

करीव चार सौ एकड़ का दान रामचन्द्र रेड्डी ने कर दिया। अब उनके पास तरी की शायद पंद्रह एकड़ और खुश्की की चौंसठ एकड़ भूमि वच रही है। इसी वीच पोचमपल्ली के नाम एक संदेश लेकर पिताजी वहाँ पहुँचे। अब सम्भव है उत्कल के वाद वावा तेलंगाना जायँ। इस खयाल से पत्र में कुछ विचार प्रकट किये गये थे।

नया संकल्प क्या किया जाय? रामचन्द्र रेड्डी सोचने लगे। परन्तु विनोवा की ओर से संदेश आया है, तो कुछ संकल्प तो करना ही चाहिए।

उस दिन की सभा में उन्होंने घोषणा की :

"जिस दिन इस गाँव का ग्रामीकरण होगा, मैं उसके लिए सदा तैयार रहूँगा। तव तक आज से मैं अपने को अपने पास जो जमीन है, उसका ट्रस्टी मानता हूँ और उसकी आमदनी में से षष्ठांश सम्पत्ति-दान में देता रहूँगा।"

रामचन्द्र रेड्डी का निवेदन समाप्त नहीं हुआ था। क्षण भर रुककर उन्होंने फिर घोषणा की—"और आज से मैं अपना जीवन इस ग्राम की सेवा के लिए अर्पण करता हूँ।"

अपनी सहधर्मिणी की ओर उन्होंने देखा, तो उस देवी ने खड़ी होकर सबको प्रणाम किया।

रामचन्द्र रेड्डी ने उनसे पूछा कि आपकी तैयारी भी ग्राम-सेवा करने की है? तो उन्होंने भी अपनी स्वीकृति प्रकट की।

ग्रामवासियों में पुनः एक बार नवचेतना का निर्माण हुआ। बड़े-बड़े जितने भूमिवान् हैं, उनमें से अधिकांश ने अपना षष्ठांश लिख दिया और सारे गाँव का षष्ठांश जुटाने में बड़े भूमिवान् प्रयत्नशील हो गये।

विनोबाजी जब पोचमपल्ली में आये थे, तब उनके स्वागत में पुरुषसूक्त सुनानेवाले शास्त्रीजी भी आये। उस बार उन्होंने केवल श्रीफल—नारियल ही विनोबाजी को अर्पण किया था।

इस बार उन्होंने विनोबाजी के सेवक द्वारा उनके पास अपनी अड़तालीस एकड़ का षष्ठांश आठ एकड़ का दान-पत्र प्रेषित किया।

× × ×

प्रथम दाता, अन्य ग्रामवासी भूमिवान्, सबने अपना योग दिया। अब भूमिपुत्रों की बारी आयी। वे क्या देंगे?

उनसे भी एक माँग की गयी। "आप लोग भी दान दे सकते हैं। आपकी मर्यादा के भीतर है।" पिताजी ने प्रेरणा दी।

"अगर हमारे वश की बात हो तो बताइये।"

"आपने अभी तक ताड़ी, शराब का व्यसन छोड़ा नहीं है। आज मुझे अपने व्यसन का दान दे दीजिये........"

कुछ देर वातावरण में गम्भीर शांति छा गयी। भूमिपुत्रों के मुखिया ने कहा, "ठीक है।" और फिर उन सबने ने प्रतिज्ञा की कि आज से ताड़ी-शराब नहीं पीयेंगे।

ठेकेदार ने अपनी दूकान वहाँ से उठा ली! सरकार ने भी उसे ठेके की शेष बची हुई रकम मुआफ कर दी।

भूदान की गंगोत्री का स्मरण इस तरह अधिकाधिक प्रेरक होता जा रहा है।

महाराज के तीन कदम : ८१ :

(१) चांडिल

उनका सारा जीवन गुजरात के सर्वहाराओं की सेवा में बीता था। जिनको समाज ने चोर, डकैत आदि समझकर तिरस्कृत कर रखा था, उनके हृदय में उन्होंने ऊँचा

स्थान पा लिया था। उनके सेवा-सातत्य ने उन पीड़ित दुखी मानवों में जीवन-क्रांति कर दी थी।

लेकिन भूदान की रणभेरी ने उन्हें अपनी उस सुदीर्घ साधना को नयी धारा में प्रवाहित करने की प्रेरणा दी।

वे विनोवाजी से आकर मिले और अपना सारा समय भूदान के काम में लगाने का संकल्प कर गये।

(२) बोधगया

विनोवा अपने कमरे में एकाकी बैठे थे। महाराज भीतर आये और नम्रतापूर्वक निवेदन किया—"मैं सोचता था कि मुझे जीवनदान देना चाहिए या नहीं। क्योंकि अब नया संकल्प तो कुछ करना था ही नहीं। जीवन तो कब का दिया ही जा चुका है। फिर भी देखता हूँ कि इस कल्पना में बड़ा जीवन भरा हुआ है। जब से जीवन-दान का चिंतन मन में चल रहा है, वृद्धावस्था का विस्मरण हो गया है। तरुणाई का अनुभव कर रहा हूँ। जीवनदान का संकल्प बड़ा चैतन्यदायी प्रतीत होता है। अतः मेरा भी जीवनदान स्वीकार कीजिये।"

विनोवाजी ने अनेक बार इस पावन और प्रेरक प्रसंग का जिक्र किया है।

(३) पुरी

आवाहन का प्रस्ताव स्वीकृत हो चुका था। सेवक लोग

विदा लेकर यथास्थान लौट रहे थे। एक वृद्ध तरुण विनोबाजी से विदा लेने आये। उनके मुखमंडल पर चिरहास्य झलक रहा था। सम्मेलन के सभापति का बोझ कंधे से उतर जाने के कारण वे और भी मुक्त-मन दिखाई दे रहे थे और किसी कृतविश्वास की झाँकी भी चेहरे पर साफ प्रकट हो रही थी। सदा की भाँति उन्होंने नम्र निवेदन शुरू किया,

"दो बरस तक अब पैदल ही घूमने की प्रेरणा होती है। १३ अप्रैल से प्रारंभ करना ठीक होगा। बोधगया में जीवनदान के कारण जिस तरुणाई का अनुभव हुआ, उसमें इस आवाहन के कारण और भी उत्साह भर गया है। आपका आशीर्वाद चाहिए।"

१३ अप्रैल से महाराज की पदयात्रा अखंड चल रही है। कांचीपुरी में उनकी दो बार की पदयात्रा के पावन संस्मरण उनके मंत्री महोदय के मुख से सुनते-सुनते बाबा की आँखों से आँसू निकल आये।

समर्पण : ८२ :

कुर्नूल में दो दिन पड़ाव था। फिर भी विनोबाजी की पदयात्रा खण्डित नहीं हुई। पहले रोज तो अलमपुर में चल कर आये ही थे। दूसरे दिन सबेरे की

प्रार्थना के बाद रोज की मंजिल और पड़ाव की सूचना देनेवाले भाई ने कहा—"आज का पड़ाव यही है, अतः यात्रा नहीं होगी।" उनका निवेदन जैसे ही समाप्त हुआ, विनोवाजी ने स्वयं सूचना दी, "आज भी यात्रा होगी और ठीक पाँच बजे शुरू होगी।" हिम, आतप, वर्षा में भी जो यात्रा अखण्डरूपेण चलती रहती है, वह किसी जगह दो दिन पड़ाव रहने से कैसे रुक सकती थी ? इसलिए ठीक पाँच बजे रोज की तरह विनोवाजी नदी के किनारे पहुँचकर एक शिला पर बैठ गये। हाथ-पाँव धोकर तुंगा के नीर से आचमन किया। 'पानी मीठा है', यह माँ का वचन याद आया !

सहयात्रियों में से कुछ लोग स्नान के लिए भीतर उतर गये। इनमें एक स्थानिक वृद्ध गृहस्थ भी थे। चलने का समय हुआ। बाबा जैसे ही उठने लगे, यह स्नातक भाई तुंगा से बाहर निकल आये और अंजलि में पानी भर बाबा के हाथ पर संकल्प छोड़ना चाहा। बाबा ने जैसे ही अपना दाहिना हाथ आगे किया, उस भाई ने अंजलि का नीर बाबा के हाथ पर छोड़ते हुए कहा, "मेरी सारी सम्पत्ति आपके चरणों में समर्पण।" थोड़ा रुकने का संकेत करके, दूसरी अंजलि भर ली और उसे भी पूर्ववत्

ऋषि के हाथ पर छोड़ते हुए पुनः संकल्प प्रकट किया, "मेरा सारा परिवार भी सर्वोदय-कार्य के लिए समर्पण !"

दाता के मुख से सारे उद्गार तेलुगु में ही प्रकट हो रहे थे। दूसरे संकल्प के अन्त में अंजलिवाले दोनों हाथ विनोबा के चरणों से चिपक गये। बाबा ने अत्यन्त स्नेहपूर्वक उस भाई को अपने दोनों हाथों से ऊपर उठाया और "चाला मंचि ही" (बहुत अच्छा) कहकर आगे बढ़े। स्नातक को दीक्षा मिली और स्नेहामृत भी मिला।

विनोबाजी तो तेजी से आगे निकल गये। दाता के साथ पिताजी पीछे-पीछे चलने लगे। एक साथी ने दोनों का परस्पर परिचय भी करा दिया। फिर बातें हुईं।

"आपने अपने घरवालों से सलाह कर ली है ?"

"वे लोग खिलाफ नहीं हैं। लड़की तो इसलिए नाराज है कि कल जमीन के साथ यह संपत्ति का दान-पत्र भी क्यों नहीं दिया। रात को एक बजे तक इसी बात पर घर में चर्चा भी चली। तो मैं सबेरे ही सेवा में उपस्थित हो गया।"

"तो अब जमीन और जायदाद, दोनों दे दी ?"

"उसमें देना क्या था ? जिसकी चीज थी, उसको लौटा दी।"

"अब परिवार का आगे कैसे होगा ?"

"अब तक कैसे होता था ? लेकिन आप कैसे प्रश्न पूछते हैं, सन्त के साथ रहकर भी ?"

"आप खुद भी नहीं चाहेंगे न कि सन्त पर अपना बोझ पड़े ?"

"सन्त पर क्यों बोझ पड़ेगा ?"

"तो समाज पर पड़ेगा ?"

"समाज पर भी क्यों पड़ेगा ? मेरा लड़का जवान है, वह परिवार को सँभाल लेगा। विनोबाजी की सलाह से कार्यक्रम बना लेंगे, अगर उनकी राय होगी तो। लेकिन क्या ईश्वर के सिवा और भी कोई किसीका बोझ उठा सकता है ? कितना लोअर (निम्न) वेदांत है आपका ?"

पिताजी मुग्ध मन से उसकी प्रसन्न मुद्रा को निहारते रहे। उसकी सादी और भोली-भाली रहन-सहन में भारत का असली रूप ही तो छिपा था। क्या समर्पण के विचार ने रेडियो ऍक्टिविटी शुरू कर दी थी ? इधर हृदय जैसे अनेक भावों से भरा जा रहा था। उधर प्रसन्न प्राची में ऊषा की लालिमा चीरकर भगवान् सहस्ररश्मि अपनी सारी प्रभातकालीन सौम्यता के साथ संसार को अंधकार से ज्योति की ओर ले जाते हुए नित-नूतन संदेश दिये जा रहे थे : 'समाजाय इदम् न मम !'

उनके पिताजी की गाँववालों ने निर्मम हत्या कर डाली थी। वे इतने जालिम थे कि किसीकी हिम्मत नहीं कि उनके बगीचे से कोई फल या फूल भी छू पाये।

उनके पुत्र श्री रामकृष्ण रेड्डी भी पर्याप्त स्वच्छंदी थे। लोगों पर अपना रोब जमा रखा था। आचार-व्यवहार में सज्जनता का अभाव था।

लेकिन जब से भू-दान शुरू हुआ, श्री रामकृष्ण रेड्डी के मन में हलचल शुरू हुई। विनोबाजी जमीन माँगते हैं. कहते हैं कि "हवा और पानी की तरह भूमि भी भगवान् की देन है, उस पर किसीका स्वामित्व नहीं है।" इस विचार ने रामकृष्ण रेड्डी को बेचैन कर दिया था।

इसी बीच श्री शंकररावजी देव की पदयात्रा शुरू हुई। श्री रामकृष्ण रेड्डी पदयात्रा में पूरा समय साथ रहे। आखिरी दिन शंकररावजी ने ग्राम-दान के लिए आवाहन करते हुए सबकी करुणा को जगा दिया। रामकृष्ण रेड्डी से नहीं रहा गया। उन्होंने घोषणा की :

"मैं दो अक्तूबर तक कहींसे भी एक ग्राम-दान विनोबाजी को भेट करूँगा।"

रामकृष्ण रेड्डी ने अपने परिवार को समझाना शुरू

किया। परिवारवाले मान गये। गाँववाले भी बड़ी संख्या में राजी हो गये। लेकिन कुछ प्रमुख लोग राजी नहीं हुए। रामकृष्ण रेड्डी की चिन्ता बढ़ने लगी। दो अक्तूबर के लिए समय अब बहुत कम रहा था। दूसरे एक गाँव में भी उनकी जमीन थी। लेकिन वह बहुत ही अच्छी जमीन मानी जाती थी। परिवार का विशेष आधार उसी पर था। उसके प्रति आसक्ति भी विशेष थी। रामकृष्ण रेड्डी ने सोचा कि भगवान् की इच्छा इस आसक्ति को ही मिटाने की दीखती है। उन्होंने इस जमीन के बारे में परिवारवालों से बात की। लेकिन खुद पत्नी ही राजी नहीं हुई। जब रेड्डीजी ने देखा कि मेरी तपस्या ही कम पड़ रही है, तो अपनी चित्त-शुद्धि के लिए उन्होंने व्रत रखा। जब तीन दिन तक निराहार रहे, तो पत्नी से नहीं रहा गया। आँखों में आँसू लेकर उसने उन्हें अपने हाथों भोजन कराया।

दो अक्तूबर में अब एक-दो दिन ही बाकी थे। गाँववाले भी राजी हो गये। रामकृष्ण रेड्डी भू-दान कार्यकर्ताओं को बुलाने गये कि ग्राम-दान-विधि पूरी की जाय।

लेकिन पड़ोस के गाँववालों से नहीं सहा गया। उन्होंने लोगों को समझाया, "सारी जमीन हाथ से निकल जायगी। फौज आयेगी, सारे गाँव पर कब्जा कर लेगी।

परेशानी होगी। तुम लोगों को क्या हो गया है? उस आदमी की बातों में नहीं आना चाहिए।"

भू-दान-के कार्यकर्ता वड़े उत्साह से वायलूर पहुँचे, तो देखा कि गाँव में बिल्कुल सुनसान है। एक-एक, आधा-आधा एकड़वाले लोग भी गाँव में नहीं हैं। हरिजन भाई भी गाँव छोड़कर चले गये हैं। सबको विश्वास हो गया था कि ग्राम-दान में खतरा है और उससे वचना चाहिए।

कार्यकर्ताओं का मुँह सूख गया। रेड्डीजी के दुख का तो पार नहीं रहा। लेकिन लोगों ने हिम्मत नहीं हारी। गाँव वाले जहाँ-जहाँ भी गये थे, वहाँ-वहाँ जाकर उन्हें समझाया गया। पूरा दिन और रातभर वैठकर उनसे बातें की। आखिर वे सब गाँव में वापिस आये। फिर भी हरिजनों को रेड्डीजी पर विश्वास नहीं हुआ। वे सब एक गिरोह बनाकर विरोध करने के लिए खड़े हो गये। उन्हें इस तरह कटिवद्ध देख उतनी ही उत्कटता, किन्तु अत्यन्त नम्रता से रेड्डीजी और उनकी सहधर्मिणी ने उन सब भाइयों के चरणों में साष्टांग प्रणाम करके पुनः पुनः क्षमा प्रार्थना की। करबद्ध प्रार्थना की कि हम पर विश्वास किया जाय। उनकी आर्त भावना से लोगों का हृदय पसीज उठा। अब तक रेड्डीजी और उनकी पत्नी की वारी

थी, अब वे सारे हरिजन भाई इस दम्पति के चरणों में गिर पड़े। उन्होंने अपनी भूल के लिए क्षमा माँगी। शंकाओं की बाढ़ दूर हुई। हृदयों से हृदयों का मिलन हुआ।

कार्यकर्ताओं के हृदय भी उस पावन-प्रसंग को देखकर आनंदाश्रुओं से भर आये। दो तारीख को विधिवत् ग्राम-दान की घोषणा हुई।

पुनः एक बार आसमान में उद्घोष गूँज उठा :

"जय-जय विनोबाजी ! जय-जय भूमि-दान-यज्ञ !!"

ईश्वर का दर्शन : ८४ :

उस रोज सभा में ग्राम-दान का विचार समझाया गया था।

सबको सदा के लिए सब उचित सुख प्राप्त करने हैं, तो ऐसा ग्राम-परिवार के बिना सम्भव नहीं, इसकी विस्तृत कल्पना दी गयी। कर्जा, कल्याण (विवाह) और कलवी (शिक्षण) के संबंध की कठिनाइयों को हल करने का उपाय भी बताया गया। ग्रामदान में केवल भौतिक लाभ ही नहीं—आध्यात्मिक समाधान भी मिलता है"—कहा गया।

सभा के बाद ७-८ सज्जन शंका-समाधान के लिए

आये। "भौतिक लाभ तो समझ में आते हैं। परन्तु आपने तो आध्यात्मिक समाधान का भी जिक्र किया था। आध्यात्मिक समाधान का इससे क्या संबंध है ?"

"आपके गाँव में कम-से-कम कितने एकड़ जमीन है हर आदमी के पास ?"

"चार।"

"अधिक-से-अधिक ?"

"अस्सी।"

"अस्सीवाले कोई आये हैं ?"

"जी।"

"कौन हैं ?"

"मैं खुद।"

"आपने क्या सोचा है ?"

कुछ रुककर और संकोच के साथ "सारी जमीन ग्रामदान में देने की बात सोची है।"

"आप ईश्वर में विश्वास करते हैं ?"

"जी।"

"आध्यात्मिक लाभ की परिणति....?"

"जी हाँ, मानता हूँ कि ईश्वर-दर्शन में होती है।"

"बहुत अच्छा कहा आपने। आपको ईश्वर दर्शन हुआ

है या नहीं, मैं नहीं जानता। परन्तु आपके रूप में मुझे तो ईश्वर का ही दर्शन हो रहा है।"

उस भाई की आँखों में मोती चमक गये।

सभी के हृदय भगवत्-भक्ति की भागीरथी में शूचिर्भूत हुए।

त्रिविध दान : ८५ :

मद्रास के भूतपूर्व मंत्री डाक्टर गुरुपादराव उस दिन बाबा से मिलने सेलम आये। स्वास्थ्य ठीक न होने से वे विशेष कुछ कर नहीं सके, इसका उन्हें अफसोस था। सहज मोटर में कहीं जा-आ लेते हैं। मित्रों से बातचीत में भू-दान का सन्देशा सुनाते रहते हैं। लेकिन पहले जैसा अब काम नहीं कर पाते। बहुत प्रतीक्षा के बाद विनोबाजी को अपने गाँव में पाया था। सन्त को क्या भेंट किया जाय? जमीन तो देनी ही चाहिए। ६० एकड़ में से १५ एकड़ का एक दान-पात्र भेंट किया।

लेकिन केवल जमीन का दान पर्याप्त नहीं माना, कमाई का और भी साधन जो है। इसलिए १५) मासिक संपत्ति-दान का दान-पत्र भी भर दिया।

डाक्टर महाशय को इतने से भी संतोष नहीं हुआ। वृद्धावस्था में भी परिश्रम का मार्ग बापूजी ने बता रखा

है—चरखे का। इसलिए महीने में दो गुंडी, याने वार्षिक २४ गुंडियों का श्रम-दान करना भी उन्होंने स्वीकार किया।

ऐसा त्रिविध दान उस रोज डाक्टर गुरुपादराव से मिला।

पुत्रदान : ८६ :

उस दिन विनोबाजी का पड़ाव सोंविमादेवी नामक एक बिलकुल छोटे-से देहात में था। जिन सज्जन के यहाँ निवास था, उन्होंने अपने १५० एकड़ में से ३० एकड़ जमीन भू-दान में दे दी थी। उस गाँव में करीब १०० और पट्टेदार थे। किसीसे अब तक जमीन माँगी नहीं गयी थी। विनोबाजी तो २॥ बजे अगले पड़ाव के लिए कूच करनेवाले थे। विनोबाजी के बाद भूमिहीनों के लिए सारे भूमिवानों से भूमि प्राप्त करने का काम कौन करेगा?

कार्यकर्ताओं ने दाता से बात की। "विनोबाजी को केवल दान से संतोष नहीं। वे चाहते हैं कि दाता कार्यकर्ता भी बनें।"

"मैं स्वयं तो अधिक कुछ नहीं कर सकूँगा। अब उम्र हो गयी है। मेरे चार लड़के हैं। मँझला लड़का त्यागराज, कर सकता है।" मैं उसे आपको सौंपता हूँ।"

पिता ने लड़के की ओर देखा। सबकी आँखें भी उसी की

ओर मुड़ीं। त्यागराज ने अपने पिता का सुझाव सहर्ष स्वीकार किया।

त्यागराज ने अपना नाम सार्थक किया।

सब मिलकर विनोबाजी के पास पहुँचे कि आशीर्वाद प्राप्त किया जाय। पिता-पुत्र का अभिनंदन करते हुए बाबा ने कहा,

"दाता-गण इस आंदोलन को उठा लें, तो आंदोलन की नैतिक योग्यता बढ़ती है। राजाजी ने हमसे इस बार मद्रास में महत्त्व का सवाल पूछा था कि 'आपके कार्यकर्ताओं में भूमि-दाता कितने हैं?' ठीक ही है—दाता स्वयं जब माँगने निकलता है, तो बहुत असर पड़ता है। दाताओं के जरिये ही यह आन्दोलन फैलनेवाला है।"

उस रोज के बाद इस घटना का उल्लेख बाबा ने कितनी ही सभाओं में किया। सह-यात्रियों से कहने लगे, "यह कोई मामूली घटना नहीं है।"

विलंब ही किया है : ८७ :

उस दिन ऋषिवैली विद्यालय के मुख्याध्यापक श्री पीअर्स ने पिताजी से विद्यालय के बालकों एवं अध्यापकों के सामने भू-दान के बारे में कुछ कहने को कहा। एक घण्टे से अधिक सबने बड़ी दिलचस्पी से भू-दान की

कहानी सुनी। सभा के बाद श्रीमती पीअर्स ने पिताजी को जलपान के लिए बुलाया। बातचीत के सिलसिले में श्रीमान् पीअर्स ने कहा, "हम लोगों के पास नासिक में ४० एकड़ जमीन है। २० एकड़ अच्छी जेरेकाश्त है और २० एकड़ पथरीली। हम लोग गत ३ साल से इस जमीन को भू-दान में देने के बारे में सोचते रहे हैं। लेकिन कई कारणों से अब तक निश्चय नहीं कर पाये थे। मैं सोचती हूँ कि यह जो २० एकड़ अच्छी जमीन है, वह विनोबाजी को अर्पण कर दी जाय। अब वे दक्षिण में आ भी गये हैं। इसलिए अधिक विलम्ब करना उचित नहीं प्रतीत होता।"

और ऐसा कहकर उस दम्पति ने अपनी अच्छी २० एकड़ जमीन का दान-पत्र लिख दिया। और एक पत्र भी पू० बाबा के नाम लिखा, जिसमें इस दान को स्वीकारने की विनम्र प्रार्थना की गयी।

एक अंग्रेज मित्र की ओर से मिलनेवाला यह पहला ही भू-दान था। पिताजी उनकी सद्भावना और उदारता, दोनों पर मुग्ध थे। किन्तु इसके पहले कि वे अपने भावों को प्रकट करते—श्री पीअर्स ने पुनः कहा,

"इसमें हमने विशेष कुछ नहीं किया है। और किया है तो यही कि इतना विलम्ब किया है। यह दान-पत्र इसके बहुत पहले ही भर दिया जाना चाहिए था।"

केडियाजी का ट्रस्ट

उन दिनों विनोबाजी का मुकाम चातुर्मास्य के लिए बनारस में था। श्री महावीरप्रसाद केड़िया सपरिवार मिलने आये। ट्रस्टीशिप के सम्बन्ध में केड़ियाजी ने एक पुस्तिका लिखी थी और पू० किशोरलाल भाई से तत्संबंधी विचार-विनिमय भी किया था। क्रियात्मक कोई ठोस कदम उठाये बिना उन्हें चैन नहीं पड़ रही थी। सेवापुरी-सम्मेलन में विनोबाजी के सत्संग से वे बहुत ही प्रभावित हुए थे।

गणेश चतुर्थी के मंगल मुहूर्त पर उन्होंने अपनी आमदनी का दशांश दान में लिख दिया तथा अपनी संपत्ति के ट्रस्टी रूप में रहने का संकल्प किया, जिसमें से अपने परिवार के खर्च के लिए २५०००) साल से अधिक न लेने का संकल्प किया।

पटना में जब विनोबाजी ने संपत्ति-दान-यज्ञ का कार्यक्रम देश के सामने रखा, तब दशांश का षष्ठांश में परिवर्तन हो गया।

इस बीच उन्होंने अपना समय भी भू-दान, संपत्ति-दान आदि कामों में देना प्रारंभ किया।

कुछ दिन और ऐसा ही चला। लेकिन महावीरप्रसादजी को इतने से संतोष न हुआ। पति-पत्नी ने आपस में

परामर्श किया। मणि बहन ने महावीरजी का उत्साह बढ़ाया,

"ठीक तो है, बाबा स्वामित्व-विसर्जन की बात करते हैं और आप भी ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त को मानते हैं, तब वैसा ही करना चाहिए।"

२ अक्तूबर को गांधी-जयंती के पुण्य अवसर पर महावीरजी ने अपने परिवार (पत्नी तथा तीन बच्चों के साथ पाँच व्यक्तियों का परिवार है।) की संपत्ति के एक पंचमांश अर्थात् अपने व्यक्तिगत हिस्से का सार्वजनिक ट्रस्ट बना दिया तथा संपत्ति के सिवा परिवार की अन्य आय में से भी पंचमांश दान में देने की घोषणा की।

कांची में विनोबाजी के परामर्श से महावीरजी तथा उनके बृहत् परिवार ने कलकत्ते में साहित्य-प्रचार का काम उठा लिया है। दोनों पति-पत्नी विनोबाजी के इस काम में तन्मय हैं।

दो महान् समर्पण : ८६ :

(१) ठा० प्यारेलाल सिंह

उस दिन उनकी चार सौ मील की पदयात्रा समाप्त हुई थी। अपनी पैंसठ वर्ष की आयु में भी वे प्रतिदिन पंद्रह से बाईस मील तक चलते।

सबेरे उनकी छाती में थोड़ा दर्द होने लगा। दादाभाई ने उन्हें आगे चलने से रोका, परंतु ठाकुर साहब का मन माननेवाला नहीं था। अनुष्ठान को बीच ही में कैसे छोड़

दिया जाय ? साधना को खंडित कैसे किया जाय ? वे पीछे नहीं रुक सके।

उस दिन जिला-सम्मेलन का आयोजन भी था। भूदानमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रांति पर वे डेढ़ घंटा बोलते रहे। सायंकाल कार्यकर्ताओं के साथ होनेवाली चर्चा में भी शरीक रहे। परस्पर परिचय के कार्यक्रम में हिस्सा लेते हुए कहा, "देखिये, लोग मुझे व्यर्थ ही वृद्ध कहते हैं। कहते हैं कि इसे हृदय-रोग हो गया है। लेकिन मैं अभी भी बाईस मील चल सकता हूँ। नौजवान लोग थक रहे हैं, लेकिन मुझे कोई थकावट नहीं है।"

परंतु, भगवान् तो उन्हें चिर-विश्राम देना चाहते थे।

रात के नौ बजे वे बिस्तर पर लेटे। पौने दस बजे हृदय में पीड़ा प्रारंभ हुई। डॉक्टर के लिए फौरन मोटर भेजी गयी। परंतु सम्मेलन का स्थान पाँच मील दूर था। डॉक्टर समय पर नहीं पहुँच सके। पहुँचते भी तो वे विधि-विधान को कैसे टाल सकते थे ?

साढ़े दस बजे ठाकुर साहब की पदयात्रा की पूर्णाहुति उनकी देह-यात्रा की पूर्णाहुति से हुई। आखिरी क्षण तक उनके मुख से रामनाम का उद्घोष जारी था। मृत्यु के समय भी उनका मुख अत्यंत शांत और प्रसन्न था। उन्होंने मृत्यु को भी वरदान में बदल दिया।

ठाकुर साहब ने भूदान-यज्ञ में अपनी आहुति समर्पण करना पसंद किया, लेकिन जो कदम उठाया था, उससे वे पीछे नहीं हटे।

भूदान-यज्ञ-आंदोलन से वे दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक तद्रूप होते जा रहे थे।

विरोधी दल के नेता होते हुए भी उन्होंने कांग्रेस के तथा अन्य पक्षों के नेताओं के साथ सच्चे हृदय से सहकार्य किया, जिसके लिए उनके पक्ष के मित्रों ने भी उनका विरोध किया। परंतु उन्होंने वह सब प्रेमपूर्वक बर्दाश्त किया। सबके साथ स्नेह-भरा व्यवहार किया। भूदान-यज्ञ-आंदोलन के कारण वे पक्षनिष्ठ और प्रतीकारात्मक प्रवृत्तियों से ऊपर उठकर लोकनिष्ठ और क्रांति के संदेश-वाहक बन गये थे। और इस तरह वे लोक-मानस में मानवता के महान् मूल्यों का बीजारोपण करते हुए आगे बढ़े जा रहे थे कि इसी बीच आत्मोत्सर्ग हो गया।

सम्मेलन का उद्घाटन इस महान् समर्पण-योग से हुआ। भूदान-यज्ञ अमर हुआ।

(२) श्री शान्ताबहन डोंगरे

अपना अध्ययन समाप्त करने पर श्री शांताबहन ने फौरन सेवा के क्षेत्र में प्रवेश करने का संकल्प किया। अकोला के 'महिला-मंडल' में वे काम भी करने लगीं।

उन्हीं दिनों अकोला जिले में श्री शंकरराव देव की पदयात्रा का आरंभ हुआ था। 'महिला-मंडल' की उदासीनता ने शांताबहन को गहरा आघात पहुँचाया। उन्होंने स्वयं भूदान में कूद पड़ने का निश्चय किया। इस समय उनकी उम्र बाईस वर्ष की थी।

शांताबहन का स्वास्थ्य बचपन से ही काफी कमजोर था। बारह वर्ष की आयु तक तो वे केवल दुग्धाहार पर ही रहीं। चाँदी की सुन्दर झारी में उनके लिए स्कूल में ही दूध पहुँचाया जाता था। अध्ययन-काल में वे मोटर में या किसी-न-किसी वाहन में ही स्कूल-कॉलेज जातीं। ऐसी ये शान्ताबहन पद-यात्रा में कैसे टिकेंगी? सबको बड़ा संदेह था। लेकिन उनका संकल्प दृढ़ था। भूदान-यज्ञ के आवाहन के सामने उन्होंने दूसरी सब बातों को गौण माना।

एक वर्ष उन्होंने बिहार में काम किया। दो माह हम दोनों ने गया में साथ-साथ पदयात्रा की। इस यात्रा में उनकी नम्रता, विद्वत्ता, परिश्रमशीलता और कार्यकुशलता ने मुझे उनकी ओर अधिकाधिक आकर्षित किया। उम्र में मैं उनसे छह वर्ष छोटी थी। लेकिन वे मुझे अपनी बराबरी की मानती थीं। हम दोनों में बहनों का-सा स्नेह था। मित्र की तरह वे मुझसे सलाह-मशविरा करतीं। मुझसे बड़ी होने पर भी, क्योंकि भूदान-आरोहण के साथ प्रारंभकाल से ही मैं

संबंधित थी, वे हर पहलू पर मेरे साथ काफी विचार-विनिमय करतीं। वे मेरे सुझावों की कद्र करतीं, उन्हें महत्त्व प्रदान करतीं। उनकी इस उदारता और महत्ता के कारण मैं संकोच से कुछ दब भी जाती, लेकिन प्रेम के सामने मैं हार जाती।

बोधगया-सम्मेलन के बाद वे कुछ दिन पूज्य विनोबाजी के सत्संग में भी रहीं। इस बीच उन्होंने कार्यभार भी काफी सँभाल लिया। प्रवचनों का लेखा, उनका प्रकाशन, पत्र-व्यवहार, मुलाकातें, कार्यकर्ताओं से चर्चा, स्त्रियों की सभाओं में तथा कभी-कभी प्रार्थना-सभाओं में भी लोगों को विचार समझाना आदि काम वे आत्म-विश्वास के साथ करने लगीं। विनोबाजी के चरणों के पास बैठकर वे नित्य-नूतन प्रेरणा पाने लगीं।

इसी बीच अपनी माताजी की बीमारी के कारण उन्हें कुछ दिनों के लिए घर आना पड़ा। सेवा की आवश्यकता समाप्त होते ही वे पुनः पदयात्रा में जुट गयीं। वे ठाकुर प्यारेलाल सिंह तथा दादाभाई नाईक के यात्री-दल के साथ हो गयीं। बहुत आग्रह करने पर भी वे कभी भाषण नहीं करतीं। दादाभाई के काम में पूरी तरह मदद करना ही उन्होंने अपना कर्तव्य समझा। बहुत कहने पर भी वाहन का उपयोग कभी नहीं करतीं।

लेकिन ठाकुर साहब के आत्मोत्सर्ग के बाद उन्होंने

फौरन अपनी जिम्मेदारी महसूस की। अब वे सभाओं में बोलने लगीं। कार्यकर्ताओं के साथ सम्पर्क कायम करने लगीं। योजनाएँ बनाने लगीं। बिलासपुर-सम्मेलन के लिए उन्होंने एक ठोस योजना भी बना ली थी। इस सम्मेलन के बाद यात्रीदल का संचालन अब वे ही करनेवाली थीं। अपनी हार्दिकता के कारण वे दिन-प्रतिदिन सबको अधिकाधिक प्रिय होने लगीं।

लेकिन परमेश्वर को शायद वे बहुत अधिक प्रिय हो चुकी थीं और शायद इसीलिए केवल बारह घंटे की बीमारी के बाद वे प्रभु के पास पहुँच गयीं। अंत तक प्रसन्न-चित्त रहीं। एक ही भावना थी—भूदान-यज्ञ सफल बने।

अरपा नदी में शांताबहन का पार्थिव शरीर अर्पित हुआ। भूदान-यज्ञ के अनुष्ठान में एक महान् आहुति का समर्पण हुआ। शांताबहन अमर हुईं—भूदान अमर हुआ।

अमर पथिक

पू० विनोबाजी ने ठाकुर साहब और शांताबहन के संबंध में श्री दादाभाई को जो पत्र लिखा, वह इस प्रकार है :

"दादाभाई,

ठाकुर प्यारेलाल सिंह और शांता डोंगरे, दोनों ने अपनी काया कृतार्थ की। परमेश्वरीय पथ के पथिक रुग्ण-शय्या में नहीं मरे। देह कैसी सहज ही छोड़ दी, मानो

वृक्ष से फल टूट पड़ा हो। हमारे लिए परमेश्वर का यह बहुत बड़ा आश्वासन है। इन घटनाओं से हमारे हृदय की श्रद्धा और पाँवों का बल बढ़ा है। आपकी सहधर्मिणी ने भी आपको इस परिस्थिति में भी यात्रा जारी रखने की सलाह दी। परमेश्वरीय प्रेरणा कैसे काम करती है, इसका यह संकेत है। हम अहंता त्यागकर निमित्तमात्र बनें।

अंतर का निर्मल, वाणी में मधुर, पाँवों से मजबूत, परमेश्वर का पथिक सतत घूमता रहे। उसके आगे-पीछे भगवान् खड़े हैं।

विनोबा के प्रणाम।"

अमर शहीद कल्याणदत्त : ९० :

मुरादाबाद जिले की अमरोहा तहसील!

कल्याणदत्तजी ने अपने को किसानों की सेवा में लगा दिया था।

जमींदारी से तो वे मुक्त हो ही चुके थे। अपनी खुद-काश्त जमीन में से भी आधी, करीब बीस एकड़ भूदान में अर्पण कर दी।

कुछ भूमिवान् उनसे इसीलिए नाराज थे कि कल्याणदत्तजी भूदान के लिए बड़ा अनुकूल और पुरजोर वातावरण निर्माण कर देते हैं, स्वामित्व-निरसन के लिए उत्कटता से अपील करते हैं।

राजनैतिक दलवाले इसलिए नाराज थे कि कल्याण-

दत्तजी ने संत विनोबा की सलाह के अनुसार चुनावों में पक्ष-भेद किये विना केवल सज्जनों का समर्थन किया, वैसा ही प्रचार भी किया।

पुलिस इसलिए नाराज थी कि डकैतियों के साथ के उनके गठबंधन का भंडाफोड़ कल्याणदत्तजी ने पुलिस के उच्चाधिकारियों के सामने और भरी सभा में किया था!

और रूढ़िवादी भी उनसे इसलिए नाराज थे कि वे छुआछूत के खिलाफ प्रचार करते और हरिजनों की मदद में कोई चीज उठा नहीं रखते।

आखिर कल्याणदत्तजी के खिलाफ षड्यंत्र रचा जाने लगा!

आनेवाले संभाव्य संकट का अंदाज उन्हें हो गया था, किन्तु सामर्थ्य होते हुए भी उन्होंने विरोधियों को किसी तरह की हानि नहीं पहुँचायी। हर तरह की कीमत देने के लिए अपने मन की तैयारी कर ली।

एक दिन, जब कल्याणदत्तजी अपने खेत में ब्रह्म कर्म (कृषि-कार्य) कर रहे थे, दो सवार दौड़ते हुए उनके निकट आ पहुँचे। दोनों ओर से एक साथ दो रायफलें उन पर तन गयीं।

कातिलों को देखते ही कल्याणदत्तजी ने अपनी भुजा उठाकर उनको इस कायरता से बाज लाना चाहा।

परंतु इसके पहले कि वह वीर भुजा ऊँची उठ पाती, दन-दन-दन पाँच गोलियाँ उनकी काया को चीरकर निकल गयीं। धरती माता ने सहसा अपनी गोद में अपने उस नौनिहाल को झेल लिया।

कायरों का समाधान नहीं हुआ। उनके शव को भी दो गोलियों का उपहार देकर और उन्हींकी चादर से उस शव को ढँककर वे लोग फरार हो गये।

आग की तरह बात सारे जिले में फैल गयी।

सारा जिला उस वीरात्मा के अभाव में रो पड़ा।

ग्रामवासियों ने अपने को अनाथ अनुभव किया।

साथियों को भयानक सूनापन महसूस हुआ।

उस अमीर शहीद की यह अद्भुत कहानी सुनकर भूदान के प्रणेता ने कहा,

"परमेश्वर की राह पर जो कत्ल किये जाते हैं, वे मरते नहीं, अमर हो जाते हैं।"

जगन्नाथपुरी के सर्वोदय-सम्मेलन में सारे सभाजनों ने खड़े रहकर दो मिनट की मौन श्रद्धांजलि इस वीर-आत्मा को समर्पित की!

सबकी भावना को प्रकट करते हुए श्री वल्लभ-स्वामी ने कहा,

"भगवान् ऐसी मृत्यु हम सबको दे!"

दान और त्याग

दुर्बल हृदय द्रव्य के लोभ को पूरी तरह नहीं छोड़ सकता। इसलिए उसके मन की उड़ान अधिक-से-अधिक दान तक ही हो सकती है। त्याग तक तो उसकी पहुँच नहीं हो सकती।

त्याग तो बिलकुल जड़ पर आघात करनेवाला है। दान ऊपर ही ऊपर से कोपलें खोंटने जैसा है। त्याग पीने की दवा है, दान सिर पर लगाने की सोंठ है। त्याग में अन्याय के प्रति चिढ़ है, दान में नाम का लिहाज है। त्याग से पाप का मूलधन चुकता है और दान से पाप का ब्याज। त्याग का स्वभाव दयालु है, दान का ममतामय। धर्म दोनों ही पूर्ण हैं। त्याग का निवास धर्म के शिखर पर है, दान का उसकी तलहटी में।

—विनोबा